# तृतीय अध्याय

# आलोच्य नाटकों के प्रमुख पात्रों का अनुशीलन

# तृतीय अध्याय

# आलोच्य नाटकों के प्रमुख पात्रों का अनुशीलन

## 3.1 चरित्र शब्द का अर्थ :-

'शिक्षक हिन्दी शब्दकोश' में 'चरित्र' शब्द का अर्थ इस तरह दिया है - ''आचरण, चाल-चलन, सदाचार, कार्यकलाप, स्वभाव, गुणधर्म, कहानी, नाटक आदि का पात्र।''[1] 'आधुनिक हिन्दी शब्दकोश के अनुसार 'चरित्र' शब्द का अर्थ है - ''व्यक्ति का क्रियाकलाप, व्यवहार, आचरण, चाल-चलन, स्वभाव, वैशिष्ट्य, व्यक्तित्व का गुणधर्म।''[2] इसी प्रकार 'नालन्दा विशाल शब्दसागर' के अनुसार 'चरित्र' शब्द का अर्थ है - ''स्वभाव में किये जानेवाले कार्य का आचरण इस प्रकार के कामों या आचरणों का स्वरूप जो किसी योग्यता, मनुष्यत्व आदि का सूचक होता है , करनी, करतूत।''[3] 'लघुत्तर हिन्दी शब्दसागर' में चरित्र शब्द का अर्थ इस प्रकार है - ''स्वभाव, कार्यशील आचरण, चरित।''[4] 'संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर' में 'चरित्र' शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है - 'स्वभाव, कार्य, शील, आचरण, चाल-चलन, करनी, करतूत।'[5] निष्कर्षत: चरित्र का कोशगत अर्थ है - 'व्यक्ति का स्वभाव, व्यवहार, कार्य-कलाप तथा चाल-चलन आदि।

## 3.2 नाटक में चरित्र-चित्रण का स्वरुप :-

कथावस्तु के बाद नाटक में पात्र एवं चरित्र-चित्रण सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है। नाटककार पात्रों के माध्यम से ही अपने मंतव्य को दर्शक या पाठकों तक पहुँचाता है।

नायक - नाटक के प्रधान पात्र को नायक कहते हैं। नायक में प्रधानत: दो प्रकार के गुणों की स्थिति मानी गई है - सामान्य गुण और विशिष्ट गुण।

धनंजय ने नेता के सामन्य गुणों का विवरण देते हुए कहा है - "नेता विनीत, मधुर, त्यागी दक्ष, प्रियवंद लोगों को प्रसन्न रखनेवाला बातचीत में कुशल रूढवंश स्थिर, युवा, बुद्धिमान, प्रज्ञावान, स्मृति संपन्न, उत्साही, कलावान, शास्त्रचक्षु, आत्मसम्मानी, शूर, दृढ प्रतिज्ञ, तेजस्वी और धार्मिक होता है।" संक्षेप में भारतीय नाट्यशास्त्र नेता को सर्वगुणसंपन्न नेता प्रस्तुत करना चाहता है। नायक के सामान्य गुणों के साथ कुछ विशिष्ट गुण भी हैं - भरतमुनि ने नायक के चार भेद माने हैं -

**1. धीरोदात्त -**

आत्मप्रशंसा न करनेवाला, क्षमाशील, अत्यंत गंभीर, हर्ष शोकादि से अप्रभावित रहनेवाला, कार्यों में स्थिर स्वाभिमानी तथा अपनी बात का निर्वाह करनेवाला नायक धीरोदात्त है। इस प्रकार का नायक सभी नायकों में सर्वश्रेष्ठ तथा उदार चरित्रवाला होता है।

**2. धीरललित -**

यह नायक निश्चित स्वभाव का,कलाप्रेमी, सुखी तथा मृदूल स्वभाव का होता है। इस प्रकार के नायक भोग-विलास तथा सुखद ललित क्रिड़ाओं में संलग्न रहते हैं।

**3. धीरप्रशांत -**

धीरप्रशांत नायकों में उपर्युक्त सामान्य गुणों के अतिरिक्त शांत-प्रकृति और प्रसन्न स्वभाव भी होता है। इन नायकों में अहंकार नहीं होता। कृपालु विनयशील और नीतिपालक भी होते हैं।

**4. धीरोद्धत -**

धीरोद्धत नायक मायावी, अहंकारी, प्रचंड आत्मश्लाघी, ईर्ष्यालु, क्रोधी, अत्यंत चंचल प्रकृति का होता है। इस प्रकार गुण, वय, स्वभाव, कर्म आदि के अनुसार नायक के भेद होते हैं। नाटक की कथावस्तु के साथ इनका प्रत्यक्ष संबंध है।

शृंगार रस की दृष्टि से नायक के चार प्रकार होते हैं -

1. **अनुकूल नायक** - सदैव एक ही नायिका में अनुरक्त रहता है।

2. **दक्षिण नायक** - एक से अधिक पत्नीवाला अवश्य होता है किंतु वह प्रधान महिषी का सर्वाधिक ध्यान रखता है। सभी नायिकाओं के प्रति उसका व्यवहार सरल, भद्र तथा सहृदय होता है। वह एक साथ सबको प्रसन्न रख सकता है।

3. **शठ** - यह अन्य नायिकाओं से प्रेम अवश्य करता है किन्तु प्रकट में नहीं।

4. **धृष्ट** - यह स्पष्ट रूप से दुराचरण करता है और निर्लज्ज होता है।

**नायिका -**

सर्वगुण संपन्न नायक की प्रिया अभीप्सिता नायिका होती है। नाट्यशास्त्र में नायिका की विशेषताएँ इस प्रकार बताई हैं - ''नायिका रूपवती, गुणशील, यौवन और शक्ति से युक्त, मधुर, प्रसन्न स्नेहपूर्ण स्निग्ध, भावपूर्ण, मधुर वचनी, योग्य, क्षोभ रहित, लय, ताल, ज्ञानी, रसयुक्त होती है।'' नायिका के रूप गुणों का आकर्षण नायक के लिए महत्वपूर्ण है। तथा नाटक की कथावस्तु विकास के लिए महत्वपूर्ण तथा प्रेरणारूप होता है। आधुनिक नाट्यशास्त्रियों के मतानुसार जो नारी पात्र मुख्य कथा के विकास में प्रधान योगदान दे वह नायिका होती है।

धनंजय ने कर्म के अनुसार नायिकाओं के तीन भेद किए हैं - ''सामान्या, स्वकीया एवं परकीया।''

1. सामान्या - इसे गणिका अथवा वेश्या कहते हैं।

2. स्वकीया - यह अपने ही पति से प्रेम करती है।

3. परकीया - अपने पति को छोड़कर अन्य व्यक्तियों से प्रेम करती है।

नायिका के ये भेद नायक के दृष्टिकोण, व्यवहार अथवा स्थिति पर निर्भर है। साथ ही नायिका की मनोदशा पर आश्रित है। इसी दृष्टि से नायिका की आठ अवस्थाओं की परिकल्पना की गई है। स्वाधीनपतिका, वासकसज्जा, विरहोत्कंठिका, खंडिता, कलहांतरित, विप्रलब्धा, प्रेक्षितप्रिया और अभिसारिका। जाति के आधार पर नायिकाओं के चार प्रकार किए कए है - ''दिव्या नृपतिनी, कुलस्त्री और गणिका।'' भारतीय नाट्यशास्त्र में असंख्य भेद मिलते हैं। इसका स्पष्ट कारण प्राचीन नाट्यशास्त्रियों ने नायिका के भेद निरूपण में अत्याधिक रूचि का निदर्शन किया है। आधुनिक नाट्यशास्त्री नायिका के भेद निरूपण में विश्वास नहीं रखते।

**प्रतिनायक -**

मुख्य नायक के विरोधी पात्र को प्रतिनायक कहा जाता है जो कि स्वभाव से लोभी, पापी, दुष्कर्मी, व्यसनी, क्रूर और धीरोद्धत होता है। प्रतिनायक की परिकल्पना के पीछे नाटककार का एक मात्र उद्देश्य होता है - असत पर सत की विजय का दिग्दर्शन कराया जाय और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए नाटककार प्रतिनायक का ऐसा चरित्रांकन करता है जो मुख्य नायक के समक्ष अत्यंत लघु, हीन और नगण्य दिखता है।

**अन्य पात्र -**

नाट्यशास्त्र में नायक, नायिका, प्रतिनायक के अतिरिक्त कई अन्य पात्रों की भी परिकल्पना की गई है। अन्य पात्र कहलानेवाले सारे पात्र नायक अथवा प्रतिनायक को सहयोग देते है। इस प्रकार के पात्रों में विट, चेट, शकार, विदूषक, पीठमर्द मुख्य हैं।

नायक की भाँति नायिका की भी सहनायिकाएँ होती हैं। जैसे - सखी, दासी, धाय आदि।

## 3.3 मिश्रजी के नाटकों में चरित्र-चित्रण :-

नाटक की कथावस्तु उसके पात्रों पर आधारित होती है। पात्रों के अभाव में नाटक के अस्तित्व की ही कल्पना नहीं की जा सकती। नाटक के पात्र जितने सजीव तथा सशक्त होंगे, नाटक उतना ही सफल होगा। पात्रों की सजीवता उनके सफल चरित्रचित्रण पर आश्रित होती है। नाटक की घटनाएँ तथा पात्रों के कार्य-कलाप परस्पर एक दूसरे को प्रभावित करते हुए कथावस्तु का निर्माण करते हैं और कथानक को गतिशील बनाते हैं। पात्रों के चरित्र घटनाओं से प्रभावित होते हैं और साथ ही वे घटनाओं तथा परिस्थितियों का निर्माण भी करते चलते हैं। घटनाओं तथा पात्रों के चरित्र में कार्यकारण सम्बन्ध जितना ही व्यवस्थित और तर्कसंगत होगा नाटक उतना ही सफल होगा। नाटक को पूरी तरह समझने के लिए उसके पात्रों को समझना आवश्यक है और पात्रों को तभी समझा जा सकता है जब उनका चरित्रचित्रण स्पष्टता से किया गया हो।

अस्तु, नाटक में पात्रों के चरित्रचितण का विशेष महत्व है और नाटक की सफलता बहुत कुछ चरित्रचित्रण की सफलता पर आधारित है। चरित्रचित्रण की विविध शैलियाँ है, उनका संक्षिप्त परिचय आगे की पंक्तियों में दिया जा रहा है।

नाटकों में चरित्रचित्रण सामान्यत: निम्नलिखित शैलियों के माध्यम से किया जाता है

अ) संवादों के द्वारा

ब) कार्य-कलापों के द्वारा

### अ) संवादों के द्वारा -

नाटक के पात्रों के संवादों द्वारा चरित्रचित्रण भी विभिन्न शैलियों में हो सकता है -

क) पात्रद्वारा स्वयं अपने चरित्र का प्रकाशन

1) स्वगत के माध्यम से

2) अन्य पात्रों के साथ कथोपकथन के माध्यम से।

ख) नाटक के अन्य पात्रों की उक्तियों के माध्यम से ।

**क) 1) स्वगत के माध्यम से -**

प्राचीन नाटकों में स्वगतोक्तियाँ स्वाभाविक समझी जाती थी किन्तु आजकल स्वगतोक्तियों का प्रयोग उचित तथा स्वाभाविक नहीं माना जाता। स्वगत चिंतन स्वाभाविक है परन्तु स्वगतोक्ति नहीं, स्वगत बोलनेवाले व्यक्ति स्वाभाविक चरित्रों की कोटि में नहीं माने जाते, यह पागलपन की निशानी मानी जाती है।

स्वगतोक्तियों की आवश्यकता तथा उपयोगिता पात्रों के हृदय के रहस्यों को जानने की दृष्टि से है। जिन रहस्यों को नाटक के पात्र दूसरे पात्रों के सामने प्रकट करना नहीं चाहते उन्हें वे स्वगतोक्तियों में प्रकट कर देते है। इन स्वगतोक्तियों के माध्यम से जहाँ हम एक ओर नाटक की घटनाओं तथा पात्रों के कार्यव्यापार देखते रहते हैं वहाँ दूसरी ओर पात्र के अन्तर्मन से भी परिचित होते रहते हैं। पात्र की चिंतनविधि तथा मानसिक संकल्प विकल्पों का परिचय स्वगतों के माध्यम से सरलता से मिल जाता है। यदि उपयोगिता की दृष्टि से स्वगतोक्तियों का मूल्यांकन किया जाय तो यह कहा जा सकता हैं परन्तु इस प्रसंग में यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि स्वाभाविकता की दृष्टि से स्वगतोक्तियों का नाटक में उपयोग नहीं किया जाना चाहिए, उनके स्थान पर अन्य साधनों तथा शैलियों का प्रयोग किया जा सकता है।

**2. अन्य पात्रों के साथ वार्तालाप करते हुए -**

नाटक के पात्र स्वयं अपने स्वभाव, विचारधारा अथवा भविष्य की योजना आदि पर अपने विचार प्रकट करते हैं और उन उक्तियों से उन पात्रों के चरित्र का परिचय मिलता है।

**ख) नाटक के अन्य पात्रों की उक्तियों के माध्यम से -**

नाटक के पात्र संवादों में दूसरे पात्रों के विषय में भी अपना मत व्यक्त करते हैं तथा साथ ही वे अन्य पात्रों के विषय में अनेक सूचनाएँ भी प्रस्तुत करते हैं। उनकी इस प्रकार की उक्तियों से नाटक के पात्रों का चरित्र दर्शकों के सामने स्पष्ट हो जाता है।

**आ) पात्रों के कार्य-क़लापों द्वारा -**

नाटक की कथावस्तु को गति देने के लिए उसमें कार्य-कलापों का होना आवश्यक है। नाटक में कार्य व्यापार की जितनी कमी होगी नाटक में उतनी ही शिथिलता आ जायेगी। नाटक के कार्य-व्यापार के माध्यम से एक ओर तो कथानक को गति मिलती है एवं नाटक की कथावस्तु आकर्षक तथा प्रभावशाली बनती है एवं नाटक की कथावस्तु आकर्षक तथा प्रभावशाली बनती है और दूसरी ओर उससे पात्रों के चरित्र को प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति मिलती है।

पात्रों के कार्यों से उनका चरित्र हमारे सम्मुख प्रस्तुत हो जाता है। केवल वाणी के माध्यम से व्यक्त चरित्र उतना प्रभावशाली नहीं होता; जितना कि कार्य-व्यापार के माध्यम से। अस्तु, पात्रों का कार्य-कलाप उसके चरित्र की अभिव्यक्ति के लिए सबसे अधिक प्रभावशाली माध्यम है।

चरित्रचित्रण की इन विभिन्न शैलियों का उपयोग सभी नाटककार करते हैं, अंतर केवल यही होता है कि कोई किसी शैली का अधिक प्रयोग करता है, तो कोई किसी का। केवल स्वगतोक्ति ही एक ऐसी शैली है, जिसका आधुनिक युग में बहिष्कार हो गया है। मिश्रजी ने अपने आलोच्य नाटकों में स्वगत का उपयोग नहीं किया है।

अत: हम मिश्रजी के नाटकीय पात्रों का चरित्रचित्रण सम्बन्धी संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत करेंगे। हमारा यह विवेचन भी सामान्यत: पात्रों के संवादों तथा उनके कार्य-कलापों पर ही आधारित है।

### 3.4 'सिन्दूर की होली' नाटक के प्रमुख पात्र : - पुरुष पात्र -

#### 3.4.1 मुरारीलाल का चरित्रचित्रण -

लक्ष्मीनारायण मिश्र द्वारा लिखित 'सिन्दूर की होली' नाटक सामाजिक समस्याप्रधान नाटक है। 'सिन्दूर की होली' नाटक में मिश्रजी ने आज के भारतीय जीवन का और हमारे परिवेश का सही चित्र चित्रित किया है। भौतिकवादी दृष्टिकोण अपनाने के कारण नैतिकता की हानि हो गयी है। आज मानव भौतिक सुखसुविधाओं की प्राप्ति के लिए अनेक अनुचित मार्गों का अवलंब करने लगा है। मुरारीलाल इस नाटक का नायक है जो इसी अनुचित मार्गों का आश्रय लेकर संपन्न बन गया है। मुरारीलाल एक स्वार्थी, चालाक, अर्थलोलुप एवं अवसरवादी ड़िप्टी कलक्टर है। उनके चरित्र में जो अनेक विशेषताएँ दिखायी देती है वह निम्न प्रकार से -

##### 3.4.1.1 अर्थलोलुप आदमी -

नाटक के आरंभ में ही मुरारीलाल के अर्थलोलुपता के दर्शन होते है। वे अपने मुंशी माहिरअली से कहते है कि - "मनोज के विलायत जाने का खर्चा इनसे वसूल कर लो ... इसी में तुम्हारी चालाकी है।"[5] वे रिश्वत लेने में किसी प्रकार का संकोच नहीं करते। इस प्रकार मुरारीलाल के अर्थलोलुपता के दर्शन होते है।

##### 3.4.1.2 बुध्दिवादी व्यक्तित्व -

मुरारीलाल बुध्दिवादी व्यक्ति है और ऐसे व्यक्ति अपने अनुचित कार्य तर्क द्वारा कर लेते है। मुरारीलाल रिश्वत लेने को बुरा नहीं समजता क्योंकि उनका तर्क है कि रायसाहब भगवन्तसिंह जैसे अमीर लोग गरिबों को लूटकर ही पैसा इकठ्ठा कर लेते है। अत: उन्हें लूट लिया तो क्या अनुचित है? उनके मुंशी मुरारीलाल को रजनीकान्त के मृत्यु का जिम्मेदार मानते है। लेकिन मुरारीलाल कहते है कि रजनीकान्त के मरने का जिम्मेदार मैं कैसा हूँ? यदि मैं रिश्वत न भी

लेता तो भी रूपय लेकर भगवन्त झूठे गवाह पैदा कर लेता। प्रथम तो इसके विरूध्द गवाही देने का किसी को साहस नहीं है और यदि कोई गवाही देना भी चाहता तो दस-दस रूपया देकर वह सच्चे गवाह को अपनी ओर मोड़ लेता। पुलिस का मुँह मीठा करके वह उसे अपने हाथ में कर चुका है। यद्यपि उसने मुझे अभी कहा है कि रजनीकान्त को मार ड़ालने को आदमी भेज दिये है। पर यह बात अदालत में कैसे प्रमाणित की जा सकती है ? अत: भगवन्त तो छूट ही जायेगा, मैं रिश्वत लूँया न लूँ तो फिर मैं बहती गंगा में हाथ क्यों न धों लूँ? वह कहता है कि हम लोग कुर्सी पर मनुष्य की रक्षा के लिए नहीं बैठते, कानून की रक्षा के लिए बैठते है।

### 3.4.1.3 दुष्कृत्य करनेवाला आदमी -

मुरारीलाल अत्यंत लोभी आदमी है। धन के लोभ में वह अपने मित्र की हत्या नदी की जलधारा में डूबोकर करता है और यह हत्या केवल आठ हजार रूपये के लिए करता है। इसीलिए वह अपने मुन्शी माहिरअली की सहायता लेते है। मित्र के गांठ के आठ हजार रूपयों से वे गाँव में एक बंगला और एक मोटारगाड़ी भी खरीद लेते है। मुरारीलाल केवल धन के लिए ही अपने मित्र की हत्या कर लेते है। यह बात केवल माहिरअली को मालूम है लेकिन उन्होंने भी तो कुछ स्वामिभक्ति और कुछ दंड के भय से उन्होंने इस रहस्य को छिपा रखा है। इसी तरह मुरारीलाल दुष्कृत्य करने पर भी अपनी सतर्कता के कारण समाज और कानून दोनों के फंदे से बच गया है।

### 3.4.1.4 प्रायश्चित लेनेवाला आदमी -

मुरारीलाल धन के लोभ में आकर अपने मित्र की हत्या करता है लेकिन बाद में उसे पश्चाताप हो जाता है; उसकी आत्मा उसे धिक्कारती रहती है। प्रायश्चित स्वरूप वह मनोजशंकर को सब तरह से संतुष्ट रखने का प्रयास करता है। साथ ही मनोजशंकर का विवाह अपनी इकलौती बेटी चंद्रकला से करके अपना दामाद बनाना चाहता है।

मुरारीलाल ने यह बात सबको कह दी है कि मनोज के पिता ने आत्महत्या कर ली थी और मरते समय मनोज को मुरारीलाल के गोद में डाल दिया था। अब वह मनोज के प्रति अपने कर्तव्य को निभाने के लिए उसका पालनपोषण कर रहा है; विश्वविद्यालय भेजकर उसे उच्च शिक्षा दिला रहा है। साथ ही वह चाहता है कि वह विलायत जाकर उच्चतम शिक्षा प्राप्त करें। इस प्रकार मुरारीलाल एक पाप के बदले प्रायश्चित के रूप में इतना सबकुछ कर रहा है।

### 3.4.1.5 आत्मबल की कमी होनेवाला आदमी -

मुरारीलाल मनोज का पालनपोषण तो कर रहा है, उसे उच्च शिक्षा दिला रहा है लेकिन मनोज इसलिए परेशान है कि उस पर इतना अधिक धन पानी की तरह क्यों बहाया जा रहा है? वह जानता है कि विद्यार्थी के खर्चे की भी कोई सीमा होती है, फिर मुरारीलाल उसे पूरा वेतन 600 रू. क्यों भेज देता है? वह अपने परिवार का काम कैसे चलाता है ? चंद्रकला के मन में जैसे शंका उत्पन्न है कि मनोज मुरारीलाल का तो अपना कोई नहीं है। फिर यह अकारण ममता क्यों? धीरे-धीरे मनोज समझने लगता है कि मुरारीलाल का व्यवहार असामान्य है। वह यह भी अनुभव करता है कि मुरारीलाल अपने वैध आय की पूरी राशि उसे भेजकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए रिश्वत के रूप में अवैध आमदनी बटोरकर पाप का भागी हो रहा है।

यही सब बातें मनोज को अपनी स्थिति के विरुध्द विद्रोह करने के लिए प्रेरित करती है। मनोज जब भी अपने पिता की आत्महत्या का कारण जानना चाहता है, तो मुरारीलाल इतना ही कहता है कि - "आत्महत्या उन्होंने की .... यह तो मैं जानता हूँ.... लेकिन क्यों ? किसलिए? इस संबंध में तो तुम्हें कोई विशेष बात नहीं बतला सकता।"[7]

स्पष्ट है कि मुरारीलाल में इतना आत्मबल नहीं कि वह मनोज को अपने पाप की सच्चाई बताकर स्वयं शान्ति प्राप्त करें और मनोज को भी सन्तुष्ट कर दें।

### 3.4.1.6 रिश्वतखोर आदमी -

नाटक के आरंभ में ही हमें मुरारीलाल की रिश्वतखोरी के दर्शन होते है। मनोज के विलायत जाने के लिए रूपयों की आवश्यकता होती है और मुरारीलाल इसी चिंता को लेकर जब चिन्तित होता है तभी उसके सामने भगवन्तसिंह आता है; जो एक कठोर एवं अत्याचारी जमींदार है, जो आनरेरी मैजिस्ट्रेट भी है और रायसाहब भी हो गया है। वह रूपयों से न्याय खरीदता है और उसका एक पट्टीदार है। रजनीकान्त जिसे रायसाहब गरीब और कमजोर समझकर जमीनदारी का उसका हक भी हड़प लेना चाहता है। भगवन्तसिंह रजनीकान्त रूपी काँटे को सदा के लिए निकाल देना चाहता है। वह जानता है कि मुरारीलाल रिश्वत लेता है और वही इस काम में मदत कर सकता है।

मुरारीलाल रिश्वत लेने में अपना कर्तव्य समझता है; किसी प्रकार का संकोच नहीं करता। इसलिये वह अपने मुंशी माहिरअली से कहता है - "मनोज के विलायत जाने का खर्च उनसे वसूल कर लो..... इस में तुम्हारी चालाकी है।"[8] माहिरअली जब रजनीकान्त के जीवन के प्रति आशंका व्यक्त करता है तो वह अपने तर्क से उसे समाप्त कर देता है। वह कहता है -

"अच्छा तो इसमें तुम क्या कर सकते हो ? मैं खूब जानता हूँ भगवन्त बड़ा जालिम है। लाखों रूपये रयत को लूट कर जमा कर लिये है। अभी तक आनरेरी मैजिस्ट्रेट था .... इस साल रायसाहब भी हो गया है। उधर का सारा इलाका उसके रोब में है। जो चाहेगा, कर लेगा। तो फिर मैं क्यों न कुछ .....।"[9]

स्पष्ट है कि वह भी अव्यवस्थित-सी व्यवस्था का अंग बनकर दोनों हाथों से धन बटोर लेना चाहता है। रिश्वतखोरी की दुनिया में वह भी रिश्वतखोर बन गया है और इसमें उसको कोई बुराई नज़र नहीं आती।

### 3.4.1.7 अवसरवादी आदमी -

मुरारीलाल चालाक, धूर्त एवं अवसरवादी आदमी है। जब भगवन्तसिंह मुरारीलाल को बातचीत के मध्य यह बताता है कि रजनीकान्त को मारा होगा तो वह इस अवसर पर भी कुछ लाभ उठाना चाहता है। वह उच्च स्वर में गरज उठता है -

"मैंने कहा था? क्या कहता है बेईमान ? मैंने कहा था कि पट्टदारी के मामले में अपने भतीजे को मार डाल खून करने को मैंने कहा था?"[10]

और फिर कुछ नरम होकर चालीस हजार रु. की और माँग करता है। भगवन्तसिंह अनुनय करता है और बताता है कि रजनीकांत अब तक मर चुका होगा। तब मुरारीलाल व्याकुल होकर रजनीकांत को बचाने का उपक्रम करना चाहता है। लेकिन भगवन्तसिंह उसे चालीस हजार रूपये देकर संतुष्ट कर देता है। वास्तविकता तो यह है कि वैयक्तिक स्वार्थों के कारण बस जो मनोज के पिता की बहुत पहले हत्या कर देता है, उसी पापवृत्ति के कारण मुरारीलाल एकदम स्वार्थी एवं चालाक धूर्त व्यक्ति बन गया है।

### 3.4.1.8 कानून व्यवस्था को दोषी ठहरानेवाला व्यक्ति -

मुरारीलाल एक डिप्टी कलक्टर है। मुरारीलाल खुद कानून का रखवाला होकर भी कानून व्यवस्था को ही दोषी ठहराता है। जब माहिरअली रजनीकान्त की हत्या का आरोप भी उसी पर लगाता है तब वह अपनी निर्दोषता सिध्द करते हुए वह कहता है कि -

"मेरी वजह से नहीं माहिरअली .....। आज इसने दस हजार दिया है। दस - दस रुपया देकर यह गवाहों को बिगाड़ देता। एक हजार भी खर्च नहीं होता और यह छूट जाता। आज का कानून ही ऐसा है इसमें सजा उसको नहीं दी जाती जो कि अपराध करता है - सजा तो केवल उसको होती है जो अपराध छिपाना नहीं जानता। बस ..... यही कानून है। आज यह मुझसे

कबूल कर गया है कि उसके मरवाने का इन्तजाम वह कर आया है। अगर वह मारा गया और मैं चाहूँ कि इसे सजा दे दूँ तो भी सबूत नहीं मिलेगा। ऐसी हालत में मेरी तबीअत, मेरी अंतरात्मा कहेगी इसे दंड देने के लिए और कानून कहेगा छोड़ देने के लिए। मुझे मजबूर होकर कानून की बात माननी पडेगी और वह छूट जायेगा। हम लोग मनुष्य और उसके अधिकार की रक्षा के लिए कुर्सी पर नहीं बैठते .... हम लोगों का तो काम है केवल कानून की रक्षा करना। यही बुराई है और इसलिए यह सब हो रहा है। उससे रुपये लेकर मैंने कोई बुराई नहीं की।''[11] उपर्युक्त मुरारीलाल के लंबे कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि वह किस तरह कानून व्यवस्था को दोषी ठहराता है और खुद को निर्दोष साबित करता है। लेकिन अगर मुरारीलाल चाहे तो रजनीकान्त को बचा सकता था।

### 3.4.1.9 काम-भावना से पीड़ित आदमी -

मुरारीलाल के व्यक्तित्व का एक पक्ष और है। मनोरमा एक बालविधवा है। जिसका विवाह आठ साल की अवस्था में हुआ था। और दो वर्ष के बाद ही वह विधवा हो गयी थी। होश संभालने के समय से ही वह अपने वैधव्य को त्याग, तपस्या, साधना, अनासक्ति को उच्च आदर्श के रूप में ग्रहण करके अपनी निष्ठा से निभा रही है। चित्रकला शिक्षा में उसे तो कुशलता प्राप्त है, उससे वह जीवन-व्यापन कर रही है। चंद्रकला को चित्रकला सिखाने के लिए वह मुरारीलाल के घर में ठहरी है।

मुरारीलाल धन के लोभ में आकर अमानवीय कृत्य करता ही है। साथ ही मानसिक दुर्बलता थी उन्हें अनुचित व्यवहार करने को प्रेरित करती है। मनोरमा के समक्ष अपना वासनात्मक प्रेम प्रकट करते समय उन्हें उचित-अनुचित का विचार ही नहीं रहता। मनोरमा उनकी पुत्री से भी छोटी है और विधवा भी। उनकी वासनावृत्ति इतनी प्रबल है कि मनोरमा के द्वारा फटकारे जाने पर भी वे उसे सत्य बताना चाहते हैं। मनोरमा कहती है - ''आप अपनी मर्यादा भूल रहे हैं। मैं विधवा हूँ। मेरे साथ परिहास का कोई अर्थ नहीं।''[12]

इतना होते हुए भी उनकी आँखें नहीं खुलती और उसके प्रतिवाद में कहते हैं - ''मैं तो उसे केवल परिहास नहीं सत्य बनाना चाहता हूँ।''[13] इस बातों से मुरारीलाल में कामवासना दिखायी देती है।

### 3.4.1.10 अकेला निराश आदमी -

मुरारीलाल अपने मित्र के पुत्र मनोजशंकर का पुत्रवत पालन करता है। उच्च शिक्षा के लिए उसे विलायत भेजना चाहता है। साथ ही अपनी बेटी का हाथ उसके हाथ में देना चाहता है। लेकिन मनोजशंकर उसपर आरोप लगाता है कि वह उसे मार डालना चाहता है। साथ ही पाप की कमाई बटोर रहा है। तब मुरारीलाल तिलमिला उठते है। वह अपने हृदय की पीड़ा व्यक्त करते हुए कहते है - ''मैं तुम्हें मार ड़ालना चाहता हूँ ? जिसके लिए चोरी करे वही कहे चोर।''[14]

अंत में माहिरअली इस रहस्य को मनोज के समक्ष कर ही देता है। जब मनोज को अपने पिता की मृत्यू का कारण समझता है तब मनोज मुरारीलाल के घर से चला जाता है। मनोरमा भी घर छोड़कर चली जाती है।

मुरारीलला की बेटी चंद्रकला रजनीकान्त की मृत्यू से इस रूप में भावाविष्ट हो जाती है कि वह बेहोश रजनीकान्त के हाथों माँग में सिन्दूर भर के सिन्दूर की होली खेलती है और अपनी पिता के पाप का प्रायश्चित करने का निश्चय कर लेती है। वह भी अपने पैरोंपर खड़ी होने का एहसास दिलाकर मुरारीलाल के घर से चली जाती है।

इसी प्रकार मुरारीलाल की सभी आशाएँ धूल में मिल जाती है और वह बिलकुल अकेला निराश आदमी बनकर रह जाता है। उसे अपने कर्मों का प्रतिफल प्रतिपक्षी की ओर से नहीं बल्कि कर्म न्याय से ही मिलता है।

**निष्कर्ष :-**

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मुरारीलाल का चरित्रचित्रण करने में मिश्रजी ने यथार्थ का सहारा लिया है। यथार्थवादिता समस्या नाटकों का मूल बिन्दू होता है और मुरारीलाल इस दृष्टि से नाटक का मूल केन्द्र है। वह एक स्वार्थी, चालाक, धूर्त एवं अवसरवादी डिप्टी कलक्टर है। इस नाटक की समस्त कथा उनके इर्दगिर्द भटकती है। उनका चित्रण मनोविज्ञान की पृष्ठभूमि पर बड़ा ही सजीव बन गया है। नाटककार ने उनके दोहरे व्यक्तित्व का बड़ा स्वाभाविक चित्रण किया है।

**3.4.2 मनोजशंकर :-**

मनोजशंकर एक युवक है; जिसे मुरारीलाल अपने लड़के के समान उसका पालन कर रहे है। वह एक ऐसा पुरुष पात्र है, जिसके सिर पर से पिता का साया बचपन से ही उठ गया था। इस स्थिति में पिता के वात्सल्य प्रेम के अभाव में उसके आचार व्यवहार में अस्वाभाविकता का होना अनिवार्य था। उसकी चरित्रगत विशेषताएँ इसप्रकार है -

**3.4.2.1 अस्थिर चरित्र -**

मनोजशंकर मुरारीलाल के मित्र का लड़का है जिसका मुरारीलाल पुत्रवत् पालन कर रहे है। मनोजशंकर के पिता की बचपन में ही मृत्यु हो गयी है। तभी से वह उसका पालनपोषण कर रहे है। उन्होंने उनके भविष्य की सारी जिम्मेदारी ली है। लेकिन फिर भी मनोज का मन पढ़ाई में नहीं लग रहा है इसी कारण परीक्षा छोड़कर वह गाँव चला आया है। इस बात से उसका मन सदा चिंतित होता है कि उनके पिता ने आत्महत्या क्यों की? इस सवाल का जबाब नहीं मिल रहा है इसी कारण उसका मन सदैव चिंतित रहता है इसे यह भी प्रश्न चिंतित करता है कि मुरारीलाल उसके ऊपर इतना खर्च क्यों कर रहे है? इसकी वजह क्या है? यह सब पता लगाने के लिए वह सबकुछ छोड़कर चला आया है। उसके मन को इस सब कारणों से कहीं भी शांति नहीं मिल रही है। वह

कही भी अपनी एकाग्रता बढ़ा नहीं सकता है। इससे वह अस्थिर चरित्र के रूप में पाठकों के सामने नज़र आता है।

### 3.4.2.2 मानसिक रोगी -

मनोज अपने को आत्मघाती पिता का पुत्र समझकर हीन परिज्ञान की स्थिति में पड़ा हुआ है। उसका हृदय विक्षुब्ध रहता है । उसे लगता है कि तब तक यह नहीं जान सकता कि उसके पिता ने आत्महत्या क्यों की ? उसे चैन नहीं मिलेगा। इसी वजह से ही वह हर बार चिंतित होता हैं और वह मानसिक रोग का शिकार हो जाता है। रात को जब अन्य छात्र होस्टेल में सोते रहते है; तब वह कमरे से बाहर निकलकर बाँसुरी बजाता रहता है। वह नियम से न सोता है, न नियम से भोजन करता है। वह अपने इन गम में ही डूबा रहता है इसी कारण वह अपनी मुस्कुराहट को भी भूल चुका है। वह अपनी परीक्षा छोड़कर चला आता है। उसके चरित्र में उत्पन्न इस हीन ग्रंथी ही उसे अकर्मण्यता की स्थिति में ला खड़ा कर देती है।

### 3.4.2.3 स्पष्टवक्ता -

मनोज का मुरारीलाल पुत्रवत् पालन करता है। फिर भी उनके साथ बोलते समय उसका मन बिलकुल हिचकिचाता नहीं है। आज ही परीक्षा है और वह सब कुछ छोड़कर घर चला जाता है। मुरारीलाल के पूछने पर कहता हैं कि -

"आज पन्द्रह दिन से बाबूजी को बराबर स्वप्न में देखता हूँ। मेरा मानसिक रोग बढ़ गया है ...... (जोर से साँस लेकर) कलेजे में लौ उठाकर जैसे आँख फाड़कर निकल जाना चाहता है। यही दशा रही तो मैं दस पाँच दिन भी नहीं जी सकता। मेरे मरने से आपका क्या लाभ होगा?" साथ वह यह भी कह देता हैं कि -

"दस वर्ष का समय निकल गया। आप रूपये के बल पर मुझे विनोद और ऐश्वर्य में अन्धा बना देना चाहते हैं, जिससे मैं आपसे न पूछूँ कि उन्होंने आत्महत्या क्यों की ..... बाबूजी ने

आत्महत्या क्यों की ? ज्यों ..... ज्यों समय बीतता जा रहा है यह रहस्य मुझ से दूर होता चला जा रहा है। लेकिन मेरे मन में, मेरी अन्तरात्मा में जो आग लगी है। वह कितनी दारूण है, आप उसे देखना नहीं चाहते। इस तरह कब तक मेरे प्राण बचेंगे।''[15]

मुरारीलाल अपनी बेटी चंद्रकला की शादी मनोज के साथ करना चाहते है। जब चंद्रकला बीमार पड़ती है तब मुरारीलाल उन्हें कहते हैं कि तुम उन्हें देखने भी नहीं गये। तब मनोज मुरारीलाल से स्पष्ट शब्दों में कहता है कि - ''मैं गया था। दस मिनट से अधिक उसके पैताने खडे रहा। उसने एक बार मेरी ओर देखा, फिर सिर के ऊपर तकिया रखकर करवट बदलकर लेट गयी। मैं उसके व्यवहार को अपना अपमान क्यों न समझूँ ? आत्मघाती पिता के पुत्र के लिए संसार में सम्मान कहाँ.....'' इन सभी बातों से मनोज की स्पष्टवादी वृत्ति स्पष्ट रूप से दिखायी देती है।

### 3.4.2.4 आधुनिक युग का प्रतिनिधी -

मनोज आधुनिक युग का प्रतिनिधीत्व पात्र है। वह मनोरमा से प्यार करता है और साथ ही साथ उसके मन में यह भी धारणा है कि वह भी उनसे प्यार करती है। उसके सामने अपना प्रेम प्रकट करते समय थोड़ा सा भी संकोच नहीं होता। जब प्रेम के बारे में उन दोनों में जब बात होती है तो मनोरमा मनोज को बताती है कि मुरारीलाल उससे प्यार करते है और वह उसके साथ खिलवाड़ कर रहे है। तब मनोज झठ से उसे कह देता है कि ''नहीं ..... उनका खिलवाड़ घडी - दो - घडी - दिन - दो - दिन का है। लेकिन तुम्हारा तो शायद मेरे जीवन के साथ ही समाप्त होगा। उसका अन्त तो मेरा अन्त है न ?'' मनोज प्रेम को सहजप्रवृत्ती मानता है। जिसके लिए समाज का कोई बंधन या मर्यादा आवश्यक नहीं। जब वह मुरारीलाल से कह देता है कि चंद्रकला रजनीकांत से प्रेम करती है। तब उस पर चिढ़ते है और कहते है कि किसी के चरित्र पर इसी तरह का आक्रमण .... मनोज प्रेम का समर्थन करते हुए कहता है कि, ''बिलकुल नहीं प्रेम करना विशेषत: स्त्री के लिए कभी बुराई नहीं ..... स्त्री जाति की स्तुति केवल इसीलिए होती है कि वे प्रेम करती है .....

प्रेम के लिए ही उनका जन्म होता है ? .....''[16] प्रेम को वह एक स्वच्छन्द प्रवृत्ति मानता है। मनोज वैधव्य को समाज का कलंक मानता है। साथ ही मनोज मनोरमा के साथ अविवाहित रहकर उसका साथ देना चाहता है। इस प्रकार मनोज के ये विचार प्रेम विवाह, नारी स्वातंत्र्य, विधवा विवाह आदि बुध्दिवाद का समर्थक है। इन सभी बातों से वह एक आधुनिक युग का प्रतिनिधित्व के रुप में हमारे सामने नजर आता है।

### 3.4.2.5 निराशावादी चरित्र -

मनोजशंकर अपने जीवन को चारों ओर से गिरा हुआ मानते है। उसका कही भी मन नहीं लगता। एक ही बात से उसका मन चिंतित होता है कि उसके पिता ने आत्महत्या क्यों की? उसके जीवन की निराशा इन शब्दों में पड़ी है - मैं हार गया। मैं पराजित होकर भी जी रहा हूँ। जीने का मतलब मेरे यहाँ रहना इस वातावरण में स्त्री के लिए ज्ञान और विद्या का कोई मूल्य नहीं है। प्लेटो के प्रजातंत्र में बुध्दि और ज्ञान का कोई स्थान नहीं दिया गया है। इतना ही नहीं जब मनोरमा उसके विवाह का प्रस्ताव अस्वीकार करती है। तो वह निराश होकर कह उठता है - ''मैं जीना नहीं चाहता।'' इसमें उनकी निराशा मनोवैज्ञानिक बनकर सत्य के रूप में सामने आयी है। इसमें आत्मपीड़ित का भाव है।

### 3.4.2.6 मनोविज्ञान का ज्ञाता -

मुरारीलाल अपनी बेटी चंद्रकला की शादी मनोज के साथ करना चाहता है। लेकिन मनोज चंद्रकला को आकृष्ट नहीं कर सकता। इसके विपरित चंद्रकला को रजनीकांत एक ही क्षण में प्रभावित कर गया। मनोज मनोविज्ञान का ज्ञाता है। वह चंद्रकला को आकर्षित नहीं कर पाता। उसके सम्बन्ध में कहता है - ''चंद्रकला के मन में कोई जगह नहीं बना सका ..... इसलिए नहीं कि मुझमें पुरुषत्व नहीं था। मेरे पास केवल एक वस्तु न थी, रजनीकांत की मुस्कान में जो जादू था। उसकी हँसी में जो कम्पन, जो मस्ती थी, उसकी अबोध आँखों में उसके अबोध हृदय का जो

आशापूर्ण प्रतिबिंब था। वह मेरे पास न था। मेरे मन में विषाद की आग जो जलती रही .....''[17] इससे इसका मनोविज्ञान का ज्ञान परिचित हो जाता है।

### 3.4.2.7 अकर्मण्य और पलायनवादी -

मनोज मुरारीलाल के मित्र का लड़का है। बचपन में ही उसके पिता की मृत्यू हो गयी थी। पिता की मृत्यू के कारण उसके सिर पर एक बोझ था कि उसके पिता ने आत्महत्या क्यों की? पिता की मृत्यू पर मनोज में एक हिन ग्रंथी आ गयी थी। जिसमें वह सबकुछ छोड़कर घर चला आया है। जिसने उसे अकर्मण्यता की स्थिति में ला खड़ा किया। पिता के मृत्यू के कारण पर वह सदा विचार करता था। लेकिन जब कालान्तर में माहिरअली से उसे अपनी पिता के मृत्यू का कारण भी ज्ञात हो जाता है तब वह स्तब्ध रह जाता है। हीन ग्रंथी के कारण पिता घाती मुरालीलाल के प्रति भी उसे आक्रोशपूर्ण व्यवहार और प्रतिकार की भावना न जाग सकी। वह मात्र अकर्मण्य और पलायनवादी ही बन सका। पिता की मृत्यू का रहस्य जानकर सिर्फ उसका बोझ हलका हो जाता है। और वह आत्मशांती का अनुभव करता है। वह समझता है कि अब वह आत्मघाती पिता का पुत्र नहीं है। स्पष्ट है कि वह जीवन से भागना ही पसन्द करता है।

### 3.4.3 माहिरअली का चरित्रचित्रण :-

लक्ष्मीनारायण मिश्र व्दारा लिखित 'सिन्दूर की होली' नाटक समस्याप्रधान सामाजिक नाटक है। 'सिन्दूर की होली' में अनेक पात्र हैं; उनमें से ही माहिरअली एक है। माहिरअली मुरारीलाल का एक पुराना मुंशी है; जो उनके पंद्रह साल से नौकरी कर रहा है। उनका प्रमुख कार्य यह है कि अपने मालिक मुरारीलाल के लिए बड़े-बड़े आसामियों को फँसाना और उनसे हजारों रूपयों की रकम वसूल करना। अत: हम उनके व्यक्तित्व में जो अनेक पहलू दिखायी देते हैं वह निम्न प्रकार से -

### 3.4.3.1 स्पष्टवक्ता आदमी -

माहिरअली मुरारीलाल का मुंशी है। वह मुरारीलाल का विश्वासपात्र मुंशी था। इसलिए अगर कोई भी बात उनके मन के अनुसार नहीं हुई तो खुले दिल से वह अपने मलिक को कहता था। उसके मन में कोई हिचकिच नहीं होती थी। जब मुरारी भगवन्त जैसे आसामियों से पैसे वसूल करने की बात करता है तब अपने मलिक से कहता है कि -''पट्टीदारी का झगड़ा है। उस दिन जो लड़का आपसे मिलने आया था, जिसकी उम्र सत्रह अठराह साल के करीब थी, उसके बाप को मरे अभी साल भर ही रहा है, अब उसे गरीब और कमजोर समझकर रायसाहब उसका एक भी हड़प लेना चाहते हैं। बेचारा उस दिन रोने लगा था। एक ही खानदान और एकही खून....''।[18] साथ में वह यह भी कहता है कि रजनीकान्त को छुड़ाने का प्रयास करें और उसका बाल भी बाँका न होने पाए। लेकिन रजनीकान्त के मारे जाने की खबर जब सुनाग्री देती है तो वह मुरारीलाल से कह देता है कि आप ही उसके मरने के जिम्मेदार है। इस प्रकार माहिरअली एक विचारशील और स्पष्टवक्ता के रूप में सामने आता है।

### 3.4.3.2 ईमानदार आदमी -

माहिरअली हृदय का बड़ा शरीफ आदमी था; विश्वासपात्र था। इतना ही नहीं वफादार और समझदार भी था, अपना कर्तव्यपालन अपनी ड्युटी को खूब समझता था। मुरारीलाल ने आठ हजार रूपये के लिए मनोज के पिता की हत्या कर दी थी। इस रहस्य को केवल माहिरअली ही जानता था। साधारण व्यक्ति की भाँति पश्चाताप तो उसके हृदय में रहा। भय भी अपने प्राणों के प्रति था, क्योंकि मुरारी ने उसको कहा था कि यदि रहस्योद्घाटन हुआ तो फाँसी हो जाएगी, क्योंकि इस हत्या में उसका भी सहयोग था।

### 3.4.3.3 व्यवहारकुशल -

माहिरअली अपने काम में होशियार था। वह व्यवहारकुशल हैं इसलिए भगवन्तसिंह से सौदा पटाने के लिए मुरारीलाल उसे ही भेज देता है। हर काम वह सावधानी और होशियारी के साथ करता है। जब भगवन्तसिंह और हरनन्दनसिंह मुरारीलाल से मिलने के लिए आते हैं; तब वह हरनन्दनसिंह से स्पष्ट शब्दों में कह देता है कि अफसर तथा मलिक लोग अपने हाथ से रिश्वत नहीं लिया करते, यही नहीं वह बड़े रोब से भगवन्त से बातें करता है। जब वह रिश्वत देने आते है तब माहिरअली की यह तेजी वह बर्दाश्त नहीं कर सकता।

### 3.4.3.4 सद्‌गुणी -

माहिरअली बुद्धिमान, न्यायपरायण है। कोई भी बात वह विचारपूर्वक कर देता है। साथ ही वह कार्यतत्पर, कर्तव्यदक्ष है। उसका तेजस्वी स्वभाव उसकी मनुष्यता को, उसकी विशाल हृदयता को, उसकी वफादारी को स्वयं मुरारीलाल भी समझता है और उसकी कदर भी करता है। नहीं तो नौकर के मुँह से ऐसी बेजबाब बातें सुनकर मलिक प्राय: बर्दाश्त नहीं करते।

### 3.4.3.5 पश्चाताप की मूर्ति -

माहिरअली मुरारीलाल के यहाँ पंद्रह सालों से काम कर रहा है। मुरारीलाल ने केवल आठ हजार रूपये के लिए मनोज के पिता की हत्या की थी। इसमें माहिरअली का भी सहयोग था। लेकिन इस पर उसे बहुत पश्चाताप हो जाता है। उसकी आत्मा उसे धिक्कारती रहती है। फिर भी मृत्यू के भय से और मालिक के साथ वफादारी से रहने के लिए वह रहस्य छिपा रहता है। साथ में वह रजनीकान्त की हत्या का षड्यंत्र जानता है तो वह चौंक उठता है। ड़िप्टी कलक्टर साहब को सचेत करता है और उसे बचाने के लिए कहता है। नाटककार ने माहिरअली के दिमाग में उन्माद भरकर मनोविज्ञान के सत्य की प्रतिष्ठा की है। अन्त में वह अपने कार्यों पर विजय पाने में समर्थ होता है। मनोज के पिता के हत्या के रहस्य को मनोज के सामने प्रकट कर देता है। इस प्रकार

अन्त में माहिरअली के चित्रण का निश्चलस्वरुप प्रकट हो जाता है और वह स्वयं भी मानसिक यातना से मुक्ति प्राप्त कर लेता है। संक्षेप में कहें तो माहिरअली पश्चाताप की मूर्ति है। उसका चरित्र बहुत ऊँचा है।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि माहिरअली एक स्पष्टवक्ता, ईमानदार, व्यवहारकुशल, सद्‌गुणी तथा पश्चाताप की मूर्ति है।

**'सिन्दूर की होली' के स्त्री पात्र -**

**3.4.4 मनोरमा का चरित्रचित्रण :-**

पं. लक्ष्मीनारायण मिश्र द्वारा लिखित 'सिन्दूर की होली' एक समस्याप्रधान नाटक है। इस नाटक में एक स्त्री पात्र मनोरमा है। मनोरमा एक बालविधवा है; जो करीबन सत्रह अठराह साल की है। उसे किसी का भी सहारा नहीं है। अब वह चंद्रकला को चित्रकला सिखाने के लिए उनके घर आयी है और उस पर ही अपना उदरनिर्वाह कर रही है। मनोरमा के चरित्र में उसके जो व्यक्तित्व के अनेक पहलू दिखायी देते हैं वह निम्न प्रकार से -

**3.4.4.1 आदर्श भारतीय महिला -**

मनोरमा एक बालविधवा है। उसकी शादी आठ साल की अवस्था में हो गयी थी। लेकिन शादी के दो साल के बाद ही उसके पति की मृत्यु हो गयी। मनोरमा जब चंद्रकला के घर में चित्रकला सिखाने के लिए आयी थी, तब उसकी पहचान मनोज से हो गयी। तब मनोरमा के हृदय में मनोज के प्रति नैसर्गिक आत्मीयता का स्फुरण हो गया है। वह कहती है कि, "मैं तुम्हारा हाथ पकडकर संसार में उतर पड़ना चाहती हूँ। संसार के लिए एक नया आदर्श पैदा करना चाहती हूँ और तुम चाहते हो कि अपने आँचल से तुम्हारा गला बाँध दूँ और अपने साथ तुम्हें भी ले डूबूँ। तुमने मेरा हृदय पहचान लिया हैं तो हाथ बढ़ाओ। तुम बाँसुरी बजाओगे। मैं चित्र बनाउँगी। मैं विधवा

हूँ और तुमको भी विधुर बनना पड़ेगा।''[19] इस प्रकार मनोरमा उदात्त भावों से अनुस्यूत आदर्श भारतीय महिला है।

**3.4.4.2 स्पष्टवक्ता तथा निर्भीक व्यक्तित्व -**

मनोरमा स्पष्टवादिता है; उसकी स्पष्टवादिता ही उसे अपने अन्तर मन के भावों की अभिव्यक्ति में हिचकने नहीं देती। फिर भी नाटककार ने अपने कौशलद्वारा कहीं भी इसका मानवी रूप धूमिल नहीं होने दिया। प्रारंभ में ही वह मुरारीलाल और मनोजशंकर की वासनावृत्ति की कटू आलोचना करती है। अपनी ओर आकर्षित होनेवाले मुरारीलाल को स्पष्ट शब्दों में फटकार देती है। मनोजशंकर से भी यही कहती है कि, ''दशाश्वमेध घाट पर भिक्षुकों में एक-एक टुकडे के लिए व्दंव्द चल पड़ता है वे सभी भूखे रहते हैं - ज्ञान के लिए वहाँ लेशमात्र भी जगह नहीं है। उन्हीं भिक्षुकों की तरह हो गई है, तुम्हारी यह पुरूष जाति।''[20] वस्तुत: जब एक ही नारी के लिए एक युवक और एक अधेड़ आकर्षित हो, तो उसका पुरुषों के विषय में ऐसी धारणा बना लेना स्वाभाविक ही है।

मुरारीलाल जब उससे घर में ही रहने का प्रस्ताव करता है, तब वह अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में कहती है - ''क्षमा कीजिएगा, पुरूष आँख के लोलुप होते हैं, विशेषत: स्त्रियों के सम्बन्ध में, मृत्यू शय्या पर भी सुन्दर स्त्री इनके लिए सबसे बड़ा लोभ हो जाती है।''[21]

वह स्पष्टवादी और निर्भीक है। मुरारीलाल की लाल आँखों का कुछ भी प्रभाव उस पर नहीं पड़ता। माहिरअली के भयंकर स्वप्न को सुनकर उसे थोड़ासा भी भय प्रतीत नहीं होता। जिस रात को माहिरअली प्रलय की रात समझता है। वह निर्भय खुले आकाश के नीचे बैठी रहती है। इस प्रकार मनोरमा स्पष्टवादी तथा निर्भीकता के रूप में हमारे सामने आती है।

### 3.4.4.3 कला की उपासक -

मनोरमा एक आदर्श, निर्भीक, स्पष्टवादी महिला के साथ-साथ वह उच्चकोटि की कलाकार भी है। वह तप, त्याग और संयम का पवित्र जीवन बिताना चाहती है। वैधव्य की पवित्रता और कला की सरसता दोनों ही उसमें विद्यमान हैं। रजनीकान्त का चित्र उसने ठीक वैसा ही बना दिया, जैसा उसने देखा था। चंद्रकला के शब्दों में वह शुष्क हृदया है। परन्तु कला के विषय में उसकी धारणा अति सरस है - ''गुलाब खिल रहा था, बसन्त छा रहा था, आधी रात को पूर्णमासी का चन्द्रमा धरती की ओर देख रहा था, उसे देखकर मेरी कल्पना और भावना उत्तेजित हो उठी - मैंने उसका चित्र बना दिया।''[22]

इस प्रकार मनोरमा कला की एक उपासक के रूप में हमारे सामने आती है।

### 3.4.4.4 हृदय की दुर्बलता -

वस्तुत: मनोरमा जिस भारतीय आदर्श विधवा जीवन का समर्थन करती है; लेकिन उसका स्वयं अनुकरण नहीं करती। वह मनोजशंकर को अपना प्रेमी बना लेने की स्वीकृति दे देती है और उसके सामने अपना प्रेम भी प्रकट कर देती है। परन्तु भारतीय विधवा स्वप्न में भी परपुरूष से प्रेम करने की इच्छा नहीं रखती। जबकि मनोरमा एक ओर तो मुरारीलाल के प्रस्ताव को ठुकराती हुई पुरुष जाति की क्रटू आलोचना करती है ; तो दूसरी ओर मनोज को अपना प्रेमी बनाने के लिए तैयार भी हैं। यह उसके हृदय की दुर्बलता ही है। इस प्रकार मनोरमा के चरित्र की यही दुर्बलता है जो उसके हृदय में दो विरोधी भावनाओं को जन्म देती है। वस्तुत: मनोरमा का व्यवहार उसके चरित्र में अजीब अस्पष्टता भर देता है।

### 3.4.4.5 परहित की भावना से परिपूर्ण -

मनोरमा का चरित्र सबसे अधिक बौध्दिक एवं व्यक्तित्वपूर्ण है, वह विधवा है। साथ ही उसका जीवन परहित की कामना से परिपूर्ण है। अत्याधिक बुध्दिवादिनी होते हुए भी वह मानव

- सहानुभूति की उच्च भावना से शून्य नहीं है। अपने सम्पर्क में आनेवाले प्रत्येक व्यक्ति का वह हित चाहती है। अन्तत: मुरारीलाल जैसा व्यक्ति भी उसकी महानता को स्वीकार कर लेता है। मुरारीलाल के ये शब्द 'तुम सचमुच देवी हो' और 'तुम्हारा असली रुप मैंने आज देखा है' उसकी यह महानता के द्योतक हैं। इस पर भी उसमें आत्म-प्रशंसा की इच्छा नाम मात्र भी नहीं है। उसकी केवल इतनी ही इच्छा है कि वह सच्चे अर्थों में विधवा हो सके। वह कहती है - "मैं पूरी तरह से स्त्री-विधवा स्त्री बन सकूँ जो हूँ, वह हो सकूँ, यही बहुत है।"[23]

निष्कर्षत: मनोरमा का चरित्र-चित्रण नाटककार ने बड़ी सहृदयता से किया है। डॉ.नैथानी के शब्दों में "मनोरमा का व्यक्तित्व तथा विचारधारा दोनों ही असाधारण है, तथापि नाटककार ने उसका चरित्र-चित्रण पर्याप्त स्पष्टता से किया है।" मनोरमा नाटकीय दृष्टि से गतिशील पात्रों की कोटि में आयेगी। उसके चरित्र में विशिष्ट गुणों का समन्वय है, जो उसे असाधारणता प्रदान करते हैं।

### 3.4.5. चंद्रकला का चरित्र-चित्रण -

'सिन्दूर की होली' का प्रमुख नारी पात्र चंद्रकला है। वह ड़िप्टी कलक्टर मुरारीलाल की इकलौती बेटी है। वह शिक्षित है और बी.ए. पास है। उसकी शिक्षा पाश्चात्य वातावरण में हुई है। उसके व्यक्तित्व में जो विशेषताएँ दिखायी देती हैं वह निम्न प्रकार से -

### 3.4.5.1 स्वच्छन्दवादी -

चंद्रकला मुरारीलाल की इकलौती बेटी है; जिसकी शिक्षा-दीक्षा पाश्चात्य वातावरण में हुई है; वहाँ स्वच्छन्द प्रेम के विचारों का बीज उसके हृदय में उत्पन्न होना स्वाभाविक है। परिणामत: चंद्रकला के हृदय में रजनीकान्त के प्रति स्वच्छन्द प्रेम के बीज अंकुरित होते हैं। मुरारीलाल तो चंद्रकला का विवाह मनोजशंकर से करना चाहता था। परन्तु मनोज अपने कुण्ठित व्यक्तित्व के कारण उसको आकर्षित न कर सका। रजनीकान्त एक विवाहित नवयुवक है। अत:

वह चंद्रकला के प्रेम का आभास पाते हुए भी उसके प्रति निरपेक्ष रहता है। चंद्रकला अपनी प्रेमभावनाओं पर नियंत्रण नहीं रख पाती और मृतप्राय रजनीकान्त के हाथ से अपने माथे पर सिंदूर लगाती है। वह सामाजिक मर्यादाओं की पूर्णत: अवहेलना कर स्वच्छन्द प्रेम की उस सीमा तक पहुँच जाती है जहाँ उसके भाग में केवल वैधव्य ही आता है।

### 3.4.3.2 भारतीय नारी -

चंद्रकला रजनीकान्त से प्रेम करती है और उसके साथ विवाह भी करना चाहती है। उनका प्रेम प्रथम दर्शन में ही हो गया था। एक दिन चंद्रकला रजनीकान्त की मरणासन्न स्थिति में उनके हाथों से अपनी माँग में सिन्दूर भरती है और तब से वह अपने आपको सुहागन मानने लगती है। भारतीय नारी जिसे एक बार पती मानती है उसी को पत्नी मानती है। पत्नी के हाथ से एक बार सिन्दूर भर लेने पर वही पती उसका हो जाता है। चंद्रकला को भी रजनीकान्त के हाथों से माँग में सिन्दूर भरने पर खुद को सुहागन बना रखा है। यह भारतीय संस्कृति का ही परिणाम है। इसके बाद जब रजनीकान्त की मृत्यू हो जाती है तब वह पिता का घर छोड़ने का विचार करती है क्योंकि भारतीय स्त्री का सच्चा स्थान पती के घर में ही होता है; पिता के नहीं। चंद्रकला पाश्चात्य संस्कृति में पली है लेकिन पति के घर को ही खुद का स्वर्ग मानती है। यह सब भारतीय विचारों का ही प्रतिक है।

### 3.4.5.3 भावूक -

चंद्रकला पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त नारी है। फिर भी प्रकृतिजन्य भावूकता का त्याग नहीं कर पायी है। वह स्वच्छन्द तथा उन्मुक्त प्रेम चाहती है। विवाह को केवल मानसिक तृष्टि का साधन मानती है। इसी कारण चंद्रकला भावावेश में आकर वह मृतप्राय रजनीकान्त के हाथ से अपने माथे पर सिन्दूर लगाती है। वह स्वच्छन्द पक्ष में आकर वैधव्य प्राप्त कर बैठती है। किन्तु

उस वैधव्य को भी चिरन्तन नारीत्व का उदय मानती है। उसके इस व्यवहार को कोरी भावुकता की ही संज्ञा दी जाती है।

### 3.4.5.4 स्त्री स्वतन्त्रता की पक्षपातिनी -

चंद्रकला की शिक्षा-दिक्षा पाश्चात्य वातावरण में हुई है; जहाँ स्वच्छन्द विचारों का बीज उसके हृदय में उत्पन्न होना स्वाभाविक है। जब अपने मन की सब व्यथा चंद्रकला मनोरमा को बताती है तब वह कहती है - पुरुष की चार हाथ की सेज में ही वह नारी-संसार को सीमित नहीं देखना चाहती। उसे रोटी और घर की चिन्ता नहीं है क्योंकि उसका प्रबन्ध वह अपनी शिक्षा के द्वारा कर लेगी। इसलिए वह अपने पति के मृत्यू पर भी चिन्तित नहीं है। उसके ये शब्द - "मेरा पुरुष मुझे अपनी गुलामी में न रख सका .... मुझे सदैव के लिए स्वतंत्र कर गया। मुझे जो अवसर कभी न मिलता वह मिल गया-"[24] यह सब आधुनिक नारी की स्वतंत्रता और अहं का स्पष्ट उद्घोष है।

### 3.4.5.5 दृढीला स्वभाव -

जिंदगी में पहली बार ही चंद्रकला ने रजनीकान्त से प्यार किया है। लेकिन जब रजनीकान्त की मृत्यू हो जाती है तब मनोरमा ने बनाया हुआ चित्र मनोरमा उसके पत्नी के पास भेजना चाहती है। लेकिन चंद्रकला स्वार्थी एवं दृढ़ीली है। वह रजनीकान्त का बनाया हुआ चित्र अपने पास रखना चाहती है। लेकिन मनोरमा वह चित्र उसके पत्नी के पास ही भेजना चाहती है। तो वह कहती है कि - "खूब कह रही हो। चित्र बनवाया मैंने और भेज दूँ उसके पास?" वह कहती है कि वह चित्र उसने अपने कमरे के लिये बनवाया है। उस चित्र में उसकी सारी आशाएँ तथा प्रेम भरा पड़ा है। अब वह चित्र उसे नहीं लौटायेगी। चंद्रकला रजनीकान्त के प्रेम में अटक गयी है। इससे उसके मन में प्रेम भावना के साथ द्वेष तथा दृढ़ीला स्वभाव स्पष्ट रूप से दिखायी देता है।

### 3.4.5.6 भावनाओं का उदात्तीकरण -

चंद्रकला अपने जीवन की तनहाई दूर करना चाहती है। कोई भी मनुष्य जीवन में अपने अकेलेपन की भावना को दूर करना चाहता है। अपने मन में दबी, छिपी भावनाएँ वह कहीं ना कहीं कलाद्वारा, गीतोंद्वारा व्यक्त करता रहता है। एक बार जब माहिरअली और चंद्रकला बातें करते हुए दिखायी देते है लेकिन चंद्रकला का मन वहाँ नहीं लगता; तब वह परमेश्वर की भक्ती करते हुए दिखायी देती है। यह उसकी भावनाओं का मिला हुआ एक नया मोड़ है।

> ''अब की सोने ना बनेगा;
> मलिक सितारान हो।''

### 3.4.3.7 क्रान्तिकारी भावना -

वैसे तो चंद्रकला के असाधारण व्यक्तित्व में एक साथ बहुत-सी मनोवैज्ञानिक समस्याएँ उलझी हुई हैं। चंद्रकला भले ही रजनीकान्त की ओर भावुकतावश आकर्षित हुई हो परन्तु उसके मूल में अवदमित वासना विद्यमान है। पिता मनोजशंकर के साथ उसका विवाह करना चाहता है, जिसे वह चाहती नहीं, उसे मनोज स्वयं नहीं चाहता। जिस रजनीकान्त पर आसक्त हुई वह उसके पिता की कर्तव्यहीनता के कारण परलोकवासी हुआ। अत: उसने मनोजशंकर को भी त्याग दिया और पिता की सामाजिक मर्यादा भी त्याग दी। मुरारीलाल के द्वारा मर्यादा बिगाड़ने की बात कहे जाने पर चंद्रकला के इस प्रत्युत्तर से स्थिति स्वत: स्पष्ट है - ''मैं तो सदैव आपके लिए प्रायश्चित करती रही हूँ। (मनोजशंकर की ओर हाथ उठाकर) इनके बाप की हत्या आपसे हुई और उसका बदला लेते रहे मुझसे, बार-बार मुझे ठोकर मार कर। अस्पताल में गई थी, जैसा कि आप देख रहे हैं ..... मेरे सिर पर यह सिन्दूर .... उस पचास .... उस पचास हजार का प्रायश्चित है।''[25] वह अपने कार्य को उचित समझती है। उसे किसी प्रकार का प्रायश्चित नहीं है। वह मनोरमा से कहती है - ''संभव है मेरा यह काम स्त्री-जीवन और समाज के विधान के नितान्त प्रतिकूल हो - लेकिन

अब तो मैं कर चुकी। इसका मुझे दु:ख नहीं है और न मैं इसके लिए पश्चाताप करूँगी।'' वह कहने में कम और करने में अधिक विश्वास करती है। इसी प्रकार परिवार, धर्म और समाज के विरुध्द क्रान्ति कर दिखाई है। किन्तु अत्यन्त शांत भाव में।

डॉ. मैथानी ने चंद्रकला के चरित्र को 'अस्वाभाविक' तथा डॉ. ओझा ने चंद्रकला के व्यक्तित्व में भावना और बुध्दि के विकास को स्वाभाविकता की दृष्टि से 'संदिग्ध' कहा है। डॉ.मैथानी का यह कथन भी कि ''चंद्रकला के अस्वाभाविक चरित्र का मिश्रजी ने बड़ा स्वाभाविक चित्रण किया है'' सत्य है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि 'सिन्दूर की होली' की चंद्रकला मिश्रजी की पात्र सृष्टि का एक विशिष्ट पात्र है जिसके माध्यम से नाटककार ने अन्तर्विरोधी से परिपूर्ण किन्तु स्पष्ट, शान्त किन्तु विद्रोहिणी, भावुक किन्तु भावुक नारी के मनोवैज्ञानिक आधार पर चित्रण किया है।

### 3.5 'संन्यासी' नाटक के प्रमुख (पुरुष) पात्र -

#### 3.5.1 विश्वकान्त का चरित्र-चित्रण -

विश्वकान्त एक कालेज का छात्र है। साथ ही वह 'दैनिक पत्र' विभाग में काम भी करता है। वह बी.ए. में पढ़ रहा है। उसके चरित्र की विशेषताएँ निम्न प्रकार से -

##### 3.5.1.1 नम्रशील -

विश्वकान्त कालेज का एक छात्र है। वह अपने कालेज की सहपाठी मालती से प्यार करता है। उन दोनों को रमाशंकर ने घूमते वक्त देखा था। रमाशंकर भी मालती पर प्यार करने की वजह से उन्हे अच्छा नहीं लगता लेकिन देरी होने की वजह से और लेख न लिखने के कारण वह विश्वकान्त को डाँटते हैं। परन्तु विश्वकान्त कुछ भी नहीं बोलता। बाद में जब विश्वकान्त को सात दिन के लिए क्लास में आने के लिए मना किया जाता है तब फिर जाकर नम्रतापूर्वक रमाशंकर से माफी माँगता है। इससे वह नम्रशील के रूप में ही पाठकों के सामने आता है।

### 3.5.1.2 उदात्त और भावुक -

नाटक का सर्वप्रमुख पात्र है। वह हाड़-मांस का एक युवक है, जिसके हृदय में उदात्त भावनाओं के साथ भावुकता भी प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। वह मालती से प्रेम करता है किन्तु मानवकल्याण के लिए उससे अलग हट जाता है। वह संवेदनशील है, आशाएँ-इच्छाएँ उसके हृदय में भी जगती हैं, जो उसे त्याग - पथ से डगमगाती रहती है। वह हमारे बीच का ही एक पात्र है, जो कभी परिस्थितियों को अपने अनुरूप ढालता है और कभी उनके अनुरूप ढलने के लिए विवश होता है। वह दृढ़ होते-होते कमजोर हो उठता है और कमजोर होते-होते दृढ़ हो जाता है। उसके देश-सेवा व्रत के पीछे वास्तव में पिता के द्वारा घर से निकाल जाना और मालती के प्रेम से वंचित हो जाना ये दो महत्त्वपूर्ण कारण हैं। वह ''मुहब्बत की चोट के कारण ही जवानी के आलम में शहीद बना है।'' मालती की माँग का सिन्दूर देखकर भावुकतावश होकर कहता है कि ''तुमने यह क्या किया ? तुम्हारे सिर का सिन्दूर, मेरे हृदय का लाल रक्त ....।'' इससे उसकी भावुकता स्पष्ट हो जाती है।

### 3.5.1.3 अस्थिर चरित्र -

विश्वकान्त में मानव-सुलभ सहज अस्थिरता है। कभी विश्वकान्त मुरलीधर के बताये मार्ग पर चलकर आजीवन ब्रह्मचारी रहकर देशसेवा की शपथ लेता है? और कभी मालती के सामने अपनी शपथ का दुखड़ा रोने लगता है। उसकी देशसेवा के पिछे वास्तव में पिता के द्वारा घर से निकाला जाना और मालती के प्रेम से वंचित हो जाना है। जब एक बार वह घर-बार और देश का परित्याग कर अफगाणिस्तान जाता है और ऐशियाई संघ की स्थापना कर उसका महामंत्री बनता है। किन्तु मुरलीधर के मृत्यु की सूचना और मालती का पत्र पाकर इतना उद्विग्न हो उठता है कि महामंत्री का पद छोड़कर भारत वापस जाने के लिए कटिबध्द हो जाता है। संक्षेप में, विश्वकान्त के चरित्र में हृदय और मस्तिष्क की मिली-जुली स्थिति है। उसके व्यवहार से कभी हृदय पक्ष की

ध्वनि आती है, तो कभी मस्तिष्क की पुकार सुनाई पड़ती है। इस प्रकार उसके चरित्र में अस्थिरता स्पष्ट रूप से दिखायी देती है।

### 3.5.1.4 असाधारण प्रतिभा तथा कार्यक्षमता -

विश्वकान्त कालेज का एक छात्र है। मालती उसकी प्रेमिका है। आदर्श के आवेग में आकर वह मालती से विवाह करना अस्वीकार कर देता है और देश सेवा के कार्य में लग जाता है। प्ररन्तु जब मालती उसके प्रतिव्दन्व्दी प्रो.रमाशंकर से विवाह कर लेती है तो वह संन्यासी बन जाता है। विश्वकान्त में असाधारण प्रतिभा तथा कार्यक्षमता है। मुरलीधर के शब्दों में - ''कभी-कभी तो वह अनुभवहीन बालक है, और कभी-कभी दूरदर्शी मनस्वी। जब कविता लिखता है तो जैसे प्रेम और विरह की उसकी अनुभूति जाग उठती है ..... किन्तु जब व्याख्यान देता है .... मालूम होता है भूक्रम्प और उल्कापात होगा ..... इतना विलक्षण ... वह आग और पानी, रात और दिन एक ही साथ है।

उसमें वाचा और लेखन की क्षमताओं का अद्भुत संमिश्रण है। अपनी वाक्शक्ति से वह विदेशों में अपनी धाक जमाता है और लेखन शक्ति से कविता और लेख विधाओं में प्रसिध्दि पाता है। इससे उसमें असाधारण प्रतिभा तथा कार्यक्षमता स्पष्ट रूप से दिखायी देती है।

निष्कर्षत: यह स्पष्ट हो जाता है कि विश्वकान्त का चरित्र-चित्रण पर्याप्त स्पष्टता के साथ किया गया है और नाटक में उसके सशक्त किन्तु दुविधापूर्ण एवं आत्मनिर्णय की शक्ति से हीन चरित्र का परिचय बड़ी कलात्मकता से प्रस्तुत किया गया है।

### 3.5.2 रमाशंकर का चरित्रचित्रण :-

रमाशंकर एक प्रोफेसर है, जो अपने कॉलेज की छात्रा मालती से प्यार करते हैं। उनके चरित्र में जो विशेषताएँ दिखायी देती है वह निम्नप्रकार से -

### 3.5.2.1 वासनामयी प्रवृत्ति -

रमाशंकर प्रोफेसर है और कक्षा में पढ़नेवाली छात्रा मालती की ओर अत्याधिक आकर्षित है। वह मालती को पचानवे अंक देकर पुरस्कार द्वारा प्रसन्न करना चाहते है। विवाह करने की बातें करके उसका हाथ पकड़कर उसे अपनी ओर खींचने का कृत्य करके अपने विलासमय जघन्य चरित्र का परिचय देते हैं। मालती के प्रेमी विश्वकान्त को कालिज से निकलवा देते हैं। यह सब वे मालती का प्रेम पाने के लिए करते है। साथ ही उससे अपनी वासना की पूर्ति भी करना चाहते है। इसी कारण वे बार-बार मालती के साथ ऐसा वर्तन करते है। यह सब उसकी वासनामयी प्रवृत्ति का लक्षण ही है।

### 3.5.2.2 नैतिकता का पतन -

रमाशंकर कालेज का प्राध्यापक है जिनमें नारी के प्रति सहज आकर्षण है, नारी उसकी कमजोरी है। नारी सौंदर्य उसे इतना प्रभावित करता है कि वह सामाजिकता और नैतिकता को एक किनारे रख अपनी छात्रा मालती से स्पष्ट निवेदन करता है। नैतिक पतन की यह स्थिति है कि वह अपने एक छात्र को अपना हमराज बनाता है और उसी के द्वारा अन्य अमानवीय कार्य सम्पादित कराता है। मालती और विश्वकान्त को कुछ काल के लिए पृथक करने में कृतकार्य भी होता है। उसका चरित्र एक अति सामान्य कोटि का चरित्र है, जिसकी अपेक्षा ऐसे प्रतिष्ठित पद प्राप्त व्यक्ति से नहीं की जा सकती।

### 3.5.2.3 ईर्ष्यालु व्यक्तित्व -

रमाशंकर मालती से प्यार करता है। वह उसे पाना चाहता है। लेकिन जब उसे समझता है कि मालती विश्वकान्त से और विश्वकान्त भी मालती पर प्रेम करता है तब वह ईर्ष्यालु हो उठता है और विश्वकान्त के विनाश के लिए तत्पर होता है। उसे क्लास में अपमानित करता है, उसे दो साल के लिए कालेज से 'रेस्टीकेट' करवाता है। मालती को अपनी ओर आकृष्ट करने के

लिए वह हर प्रयास करता रहता है; दोनों को विभक्त करने का भी प्रयास करता रहता है। इसी कारण ही वह ईर्ष्यालु व्यक्ति के रूप में हमारे सामने आता है।

निष्कर्षत: यह स्पष्ट हो जाता है कि रमाशंकर का चरित्र एक अति सामान्य कोटि का चरित्र है, जिसकी अपेक्षा ऐसे प्रतिष्ठित पद प्राप्त व्यक्ति से नहीं की जा सकती।

### 3.5.3 मुरलीधर का चरित्र-चित्रण -

लक्ष्मीनारायण मिश्र द्वारा लिखित 'संन्यासी' नाटक का मुरलीधर एक क्रान्तिकारी और प्रमुख पात्र है। लोकसेवा और राष्ट्रहित के लिए पूर्णत: समर्पित एक चरित्र है। उसके व्यक्तित्व में जो विशेषताएँ दिखायी देती है। वह निम्न प्रकार से -

#### 3.5.3.1 उदात्त विचारशील व्यक्ति -

मुरलीधर एक क्रान्तिकारी पात्र है। उन्होंने जीवन का, वस्तुस्थिति का अर्थ समझ लिया है। इसी कारण वह विश्वकान्त को समझाते है। विश्वकान्त पिता के द्वारा घर से निकाले जाने और मालती के प्रेम से वंचित हो जाने की वजह वह अत्यंत दु:खी हो गया है। मुरलीधर विश्वकान्त को समझाते हुए कहते है कि साहित्य और कला दोनों ही का सम्बन्ध जीवन से है, उसे विजयी बनाने का उपक्रम करो। नित्य की नयी-नयी आकांक्षाएँ और प्रवृत्तियाँ वास्तविक बन्धन नहीं है। व्यक्ति जीवन और समाजजीवन में बहुत अन्तर नहीं है। जिस तरह कविता में सारे संसार के सुख-दु:ख का अनुभव करते हो ... उसी तरह कर्तव्य में करो। अपने जीवन की परिधि विस्तृत करो, उसमें सारे समाज और सारे देश को आने दो।''[27] इससे उनके उदात्त विचारों के दर्शन होते है।

#### 3.5.3.2 देशसेवा की भावना -

मुरलीधर एक क्रान्तिकारी पात्र है, जो लोकसेवा और राष्ट्रहित के लिए पूर्णत: समर्पित एक चरित्र है। उसके हृदय में किरणमयी के लिए प्यार है जिसका यदा-कदा प्रदर्शन भी होता है

किन्तु राष्ट्रप्रेम और जनसेवा उसका संयमन कर देती है। उसने देशसेवा के लिए विवाह भी नहीं किया। वह देश के भविष्य के साथ अपने भविष्य की कल्पना करता है और उसी सुखद कल्पना के लिए वह जीवनभर संकट सहता है। राष्ट्रसेवा के लिए दूसरों को भी तैयार करता है और उनके बदले स्वयं कष्ट भी उठाता है।

### 3.5.3.3 त्यागी वृत्ती -

मुरलीधर किरणमयी से प्यार करता है; लेकिन देशसेवा के लिए उन्होंने विवाह नहीं किया है। उनका कहना है कि आकांक्षा की तृप्ति जीवन के वेग को रोक सकती थी। विश्वकान्त तो मुरलीधर के निर्देशन में ही देश भक्ति का कार्य करने लगा था। विश्वकान्त सम्पादकीय के कारण उसको जेल हुई थी, परन्तु उन्होने अदालत में उसका नाम न बताकर स्वय जेल भोगी और उसमें उनकी मृत्यू हो गयी। यह सब उनकी त्यागी वृत्ति का परिणाम है।

### 3.5.3.4 दूरदर्शिता -

जब विश्वकान्त को गोरी जातियों के लेख पर शिक्षा हो जाती है तब मुरलीधर उस वक्त अपना स्वयं का नाम बताते है। मुरलीधर को जेल में यक्ष्मा का रोग हो जाता है तब वे बताते है कि विश्वकान्त को यह रोग होता तो दुनिया की बहुत हानि होती। मुरलीधर ने विश्वकान्त को पहचान लिया है। उनका विश्वास है कि एशिया संघ की स्थापना कर लेगा। उनमें आदम्य विश्वास, साहस है। वह सब जिम्मेदारी निभा सकेगा। परिणामत: विश्वकान्त भी एशियाई संघ की स्थापना के लिए कृत संकल्प करता है और उसका महामंत्री बनता है। मुरलीधर का सपना उन्होंने सच किया था। इससे उनकी दूरदर्शी प्रवृत्ती हमारे सामने आती है।

निष्कर्षत: यह स्पष्ट हो जाता है कि मुरलीधर के चरित्र में विवेक और दूरदर्शिता है, सत् असत् निर्णायक बुध्दि और उत्सर्ग की उत्कट भावना है वह एक आदर्श पुरुष है।

### 3.5.4 'संन्यासी' नाटक के स्त्री पात्र :-

### किरणमयी का चरित्रचित्रण -

किरणमयी एक सौंदर्यवती युवती हैं। उसका विवाह दीनानाथ के साथ हुआ है। फिर भी किरणमयी को दीनानाथ के साथ रहना अच्छा नहीं लगता। इसी कारण किरणमयी दीनानाथ को बार-बार फटकारती है। उन पर गुस्सा करती है। लेकिन किसी ओर को दु:ख हो यह बात उसे मान्य नहीं है। जब किरणमयी के दर्दभरे गीत सुनकर मालती का हृदय पिघल जाता है तब किरणमयी समझती है कि मालती का मन काफी दु:खी हुआ है। तब समझाते हुए वह कहती है कि, "तुम रो रही हो ? हाय रे स्त्री का हृदय .... थोड़ी सी आँच, और पिघल उठा। क्या हुआ?"[28]

मालती के प्रति उसे सहानुभूति है। वह उसका दु:ख समझ सकती है। आखिर किरणमयी भी नारी ही है।

### 3.5.4.2 संगीत प्रेमी -

किरणमयी दीनानाथ की पत्नी है। उसे संगीत बजाना बहुत ही अच्छा लगता है। वह कभी सितार, कभी हारमोनियम तो कभी बाँसुरी बजाती रहती है। जब उसे दु:ख या मन को शांति नहीं मिलती तब वह गीतों के आधारपर अपने आपको अभिव्यक्त करती रहती है। किरणमयी ने स्त्री मन को परखा है। इसलिए जीवन की वास्तविकता समझ सकती है। उसके मत के अनुसार संगीतसाधना से मन को शांति मिल सकती है तथा दु:खों के बादल ढल सकते है। स्त्री के जीवन में अगर संगीत नहीं है तो सिर्फ दु:खों का सागर ही पड़ा रहेगा। इसलिये वह अपनी भावनाओं का उदात्तीकरण संगीत तथा गीतोंद्वारा करती है।

### 3.5.4.3 तत्त्वज्ञानी -

किरणमयी एक सौंदर्यवती और जवान युवती होने के साथ-साथ बुद्धिमान भी है। दीनानाथ जब किरणमयी को खद्दर की साडी बदलने को कहते है तब किरणमयी उन्हें कहती है कि जीवन में सादगी का ही उपयोग हो सकता है तथा वही तत्त्व काम आनेवाला है। जीवन में अगर तत्त्वहीन जीना है तो कोई फायदा नहीं। खादी तत्त्वों को मालती समझ गयी है। लेकिन दीनानाथ इन खादी तत्त्वों से घृणा करते है। तब किरणमयी उन्हें समझाते हुए कहती है कि - ''इस युग में कोई भला मनुष्य चाहे वह स्त्री हो या पुरुष खादी धर्म से घृणा नहीं कर सकता। संसार इसकी उपयोगिता समझ रहा है। करोडों गरिबों की भूख मिट सकती है। तुम्हारा देश स्वाधीन हो सकता है।''[29]

इस प्रकार किरणमयी समझ गयी है कि करोडों गरिबों की भूख इससे मिट सकती है। जीवन सुधर सकता है। देश भी इससे सुखी हो सकता है। जीवन में सादगी का विचार ही यश दे सकता है। इन बातों से किरणमयी की तत्त्वज्ञानी वृत्ति दिखायी देती है।

### 3.5.4.4 स्पष्टवक्ता -

किरणमयी की बातों-बातों से यह पता चलता है कि किरणमयी बहुत ही स्पष्टवादी नारी है। उसका दीनानाथ के साथ विवाह होता है। जब दीनानाथ बार-बार किरणमयी के साथ प्रेम का वर्तन करते है तब वह स्पष्ट रूप से कहती है कि जब उन्हें देखती है तो पिताजी याद पड़ते है। मेरा मन, तबियत तुम्हारे साथ नहीं लगती, मैं तो तुम्हारे साथ बहुत जल्दी ऊब जाती हूँ। लेकिन रहना तो पड़ेगा इसलिए तुम्हारे साथ रहना ठीक है। समाज भी ऊँगली नहीं उठायेगा। साथ ही दीनानाथ का प्रेम बर्ताव उसे अच्छा नहीं लगता तब वह स्पष्ट रुप से कहती है कि ''कोई समय नियत कर लो। मैं अपने शरीर को लेकर तुम्हारी सेवा में .... जो इच्छा हो।''[30]

किरणमयी पुरुष जाति से द्वेष करती है। अविश्वास करती है कि वे लोग नारी को बचाने के बजाय डूबो देंगे। उसका यह आत्मविश्वास है। वह मुरलीधर के साथ बातें करते हुए

स्पष्ट शब्दों में कहती है - "मैं तो डूबती रहूँगी । तब भी आपको निकालने को नहीं कहूँगी .... आप निकालना तो दूर रहा, पत्थर फेंककर जल्दी डूबो देंगे। आप ही नहीं, कोई भी पुरुष नहीं निकालेगा .... डूबा देगा।"[31] बाद में यह भी कहती है कि पुरुष जाति बेभरोसे की होती है। कब धोखा देंगे पता नहीं चलेगा।

"मैं खूब जानती हूँ। आप उन लोगों में है जो कूएँ के मुँह निकाल कर छोड़ देते हैं। आप ऐसे लोग ..... कल्पना कर हृदय काँप उठता है।"[32] इतना सबकुछ वह बिना हिचकिचाते हुए कहती है। इन सभी बातों से उसकी स्पष्टवादी वृत्ती दिखाई देती है।

### 3.5.4.5 उद्विग्नता से भरी हुई -

किरणमयी दीनानाथ की हरकतों से बाज आ गयी है। उसके साथ रहना उसे बिलकुल अच्छा नहीं लगता। दीनानाथ सिर्फ शराब और शरीरसुख चाहता है। दोनों का अनमेल विवाह होने के कारण दोनों में समझौता नहीं हो पाता। किरणमयी दीनानाथ का साथ न देने के कारण दीनानाथ किरणमयी को दूसरी शादी करने की धमकी देते हैं। तब उद्विग्न होकर किरणमयी कहती है - "बड़ी दया हो .... कम से कम मुक्ति मिल जाएगी।"[33]

वैसे देखा जाय तो किरणमयी मुरलीधर से प्रेम करती है। इसी कारण वह दीनानाथ से प्रेम नहीं कर सकती। समाज की रूढ़ियों और बंधनों से किरणमयी उबल गयी है। वे दोनों भी एक दूसरे को चाहते हैं, पर समाज उन्हें मान्यता नहीं देता। इन सब परिस्थितियों के कारण किरणमयी उद्विग्न हो जाती है। तब वह हताश होकर कहती है -"लेकिन हम लोग तो हार रहे हैं .... समाज की सूखी रुढ़ियों से।"[34]

### 3.5.4.6 आधुनिक विचारधारा से प्रभावित -

किरणमयी आधुनिक विचारधारा से प्रभावित है। उसका मन घर की चार दिवारों के अन्दर नहीं लगता बल्कि उसका मन अपने मित्रों में लग जाता है। पाश्चात्य सभ्यता के अनुसार वह

चाहती है कि दीनानाथ भी जहाँ दिल लगे वहाँ बोले और किरणमयी भी अपना दिल अपने मित्रों में बह ले। इस प्रकार की बात भारतीय संस्कृति में नहीं होती। किरणमयी ने दीनानाथ के साथ केवल समाज के लिए विवाह किया है, जो एक करार है। भारतीय परंपरानुसार स्त्री को पति परमेश्वर समान होता है लेकिन किरणमयी को यह बिलकुल मान्य नहीं है। वह स्वच्छंदी वृत्ती से जीना चाहती है। किरणमयी समाज के लिए दीनानाथ के साथ रहने का नाटक कर रही है। दीनानाथ से किरणमयी चाहती है कि दोनों सिर्फ एक दूसरे पर विश्वास रखे, न कि उपदेशक बने। एक दूसरे की मजबूरी जाने और बिना कष्ट देते हुए स्त्री-पुरुष सिर्फ एक घंटे में दोस्त जैसे रहे ताकि जीवन में समझौता हो। परन्तु समझौता यह भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठा नहीं है। इस प्रकार किरणमयी अत्याधुनिक विचारधारा से प्रभावित दिखायी देती है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि किरणमयी एक सौंदर्यवती, संगीतप्रेमी के रूप में, स्त्री मन की परख करनेवाली, अहंभावी, तत्त्वज्ञानी, स्पष्टवादी, उद्विग्नता से भरी हुई तथा अत्याधुनिक विचारधारा से प्रभावित के रूप में सामने आती है।

### 3.5.5 मालती का चरित्रचित्रण :-

लक्ष्मीनारायण मिश्र व्दारा लिखित मालती 'संन्यासी' नाटक की सबसे समर्थ पात्र है। मालती उमानाथ की बेटी है; जो कॉलेज में बी.ए. में पढ़ती है। उसके व्यक्तित्त्व में जो विशेषताएँ दिखायी देती हैं; वह निम्न प्रकार से -

#### 3.5.5.1 अहंभावी वृत्ति -

मालती उमानाथ की बेटी है। वह विश्वकान्त से प्रेम करती है। दोनों भी एक दूसरे के प्रति अनुरक्त है; लेकिन मालती को रमाशंकर भी चाहता है। उन दोनों के बीच का रिश्ता उसे अच्छा नहीं लगता है। विश्वकान्त और मालती दोनों साथ-साथ पढ़ते है। विश्वकान्त संपादक है; फिर भी वह छात्रावस्था में है।

एक दिन कॉलेज के लिए दोनों को देर हो जाती है। तब प्रोफेसर रमाशंकर विश्वकान्त को देरी होने की वजह से डाँटते है और क्लास के बाहर जाने के लिए कहते है और सात दिन तक क्लास में आने की अनुमति नहीं देते तब मालती को अपने प्रेमी का अपमान सहा नहीं जाता और वह उठकर चली जाती है। बाद में विश्वकान्त भी क्लास से चला जाता है; लेकिन फिर प्रोफेसर रमाशंकर की माफी माँगने के लिए चला जाता है। क्योंकि उनकी हाजिरी कम होने की वजह से वह परीक्षा नहीं दे सकता। तब वह कहती है कि - "तुम को इसकी चिन्ता ? इस साल बी.ए. की परीक्षा न दे सकोगे? यही न ? इसलिए क्षमा माँगते हो?"[35]

मालती जानती है कि इन सात दिनों की अनुपस्थिति का परिणाम गंभीर हो सकता है; फिर भी उन्होंने किसी के सामने लाचार होकर सिर झुकाना लाचार होकर दया क्षमा की भीख माँगना यही बुरी बात है ऐसा उनका कहना है। कौनसी भी वजह से किसी के सामने हाथ जोड़ना उसे पसंद नहीं है। वह अपना स्वाभिमान कायम रखना चाहती है।

मालती एक अमीर की बेटी होने कारण पैसों से हर चीज खरीदी जाती है ऐसा उसका कहना है। विश्वकान्त एक लेखक है। एक दिन मालती के आलमारी में रखी गयी पुस्तक विश्वकान्त के हाथ लगती है। तब वह उस पुस्तक को देखता है। विश्वकान्त को लगता है कि वह उस पुस्तक का लेखक है इसी कारण उसका अधिकार उस पुस्तक पर है। लेकिन मालती का विचार है कि लेखक कोई भी होगा; पर अधिकार तो जिसका पैसा है उसका होता है।

विश्वकान्त का मन इस विचार से जल उठता है क्योंकि मालती उसे अपमानित करती है। मालती का मन अहंभावी वृत्ती का है। साथ ही विश्वकान्त ने पुस्तक लिखी है - ऐसा कहने के बावजूद भी उसे पैसों का गर्व है। वह स्पष्ट शब्दों में कहती है - "मैंने दाम देकर खरीदा है, लेखक का क्या अधिकार?"

### 3.5.5.2 स्पष्टवक्ता -

मालती अहंभावी है; लेकिन वह बहुत ही स्पष्टवादी है। मालती के प्रथम दर्शन हमे विश्वकान्त और मालती घूमने वक्त होते है। उसी दिन क्लास में आने के लिए दोनों को देर हो जाती है। तब प्रोफेसर रमाशंकर विश्वकान्त को डाँटते है और क्लास के बाहर जाने के लिए कहते है। क्लास से जाने के बाद वह विश्वकान्त को स्पष्ट रुप से कहती है कि रमाशंकर उससे प्रेम करते है। इसलिए तुम पर क्रोधित हो गये है; बाकी कुछ कारण नहीं है। मालती रमाशंकर से द्वेष करती है। इसलिए उनका कोई भी कथन या स्तुति उनसे अच्छी नहीं लगती। एक बार जब किरणमयी के घर में रमाशंकर आते है और मालती को उनकी उदासी का कारण और बदनामी का कारण पूछते है। साथ ही अपना हाथ उसके कंधे पर रखते है; तब वह सभ्यतापूर्वक वर्तन करने के लिए स्पष्ट कह देती है। एक बार रमाशंकर के कारण विश्वकान्त का 'रेस्टिकेशन' हो जाता है तब भी वह स्पष्ट शब्दों में पूछती है और उनके द्वारा मालती को दिये गये दो पत्र स्थानीय दैनिक में प्रकाशित करने की धमकी देती है। इसप्रकार अनेक बातों से उसकी स्पष्टवादी वृत्ती दिखायी देती है।

### 3.5.5.3 विचारशील -

वैसे देखा जाय तो मालती विश्वकांत से बहुत ही प्रेम करती है। लेकिन विश्वकान्त मुरलीधर की प्रेरणा से सबकुछ त्यागकर देशसेवा करने के लिए गया है। वह विश्वकान्त को पत्र लिखकर विवाह के बारे में पूछती है; तब विश्वकान्त उन्हें समाज की रुढ़ी परंपरा के नुसार विवाह करने के लिए कहता है। यह पत्र पढ़कर उसे धक्का लगता है। तब वह रमाशंकर के साथ विवाह करने के लिए तैयार हो जाती है। वह रमाशंकर से स्पष्ट शब्दों में कह देती है कि अगर तुम्हारी इच्छा हो तो मैं तुम्हारे साथ विवाह करने के लिए तैयार हूँ। वह कहती है कि प्रेम तो मैंने विश्वकान्त के साथ ही किया फिर भी अब वह प्रेम करना नहीं चाहती, विवाह करना चाहती है। इस बारे में वह रमाशंकर से कहती है कि -

"जो आप चाहे मुझे अब कोई विरोध नहीं। अब कितने दिनों तक मैं रोमान्टिक प्रेम नहीं चाहती विश्वकान्त के साथ मेरा यही था। मैं वह प्रेम चाहती हूँ। जो आजकल की दुनिया में समझदारी के साथ निबाहा जा सके। जिंदगी में प्रेम की जगह बहुत कम है; और सब तो दुनिया की बातें ..... सुख से रहना अगर हो सके .... मन बहलाव के समान। एक वर्ष पहले सोते जागते, उठते, बैठते मेरे सिर पर प्रेम का भूत चढ़ा रहता था। अब उतर गया। अब मै दुनिया ... अपनी आँखों से देख रही हूँ - वह मेरे लायक हो गई है। आप जैसे घबड़ा रहे हैं। मैं समझ कह रही हूँ ... लेकिन जो मैं रही हूँ खूब सोच कर....."[36] इन बातों से उसकी विचारशीलता स्पष्ट दिखायी देती है।

### 3.5.5.4 नारी सुलभ भावना -

प्रेम करना यह नारी की नैसर्गिक प्रवृत्ती है। फिर भी नारी को संसार में समझौता करना पड़ता है। मालती जानती है कि प्रेम करना यह नारी सुलभ भावना है। नारी किसी पुरुष का सहारा चाहती है। उसके साथ रहने में उसे अपना सबकुछ समर्पित करने मे समाधान होता है। रमाशंकर मालती के इन सब बातों का खयाल रख सकता है। इसी कारण वह उसके साथ विवाह के लिए स्वीकृती देती है। पुरुष की अहंमान्यता पर स्त्री विजय पाती है। एक जगह उसका कथन है - "आप सदैव प्रेम करती रही प्रेम संपादन की दृष्टि से। मुझे जरुरत है किसी पुरुष की, मेरे साथ रहने के लिये ... अपनी जरुरतों को पूरा करने के लिए। इसलिए मैंने रमाशंकर को पसंद किया है। इस समय चिरंतन नारीत्व ने पुरुष की अहमान्यता पर विजय पायी है। तुम्हारी विजय हमारी विजय है।"[37]

### 3.5.5.5 संश्लिष्ट चरित्र -

मालती का चरित्र अत्यंत संश्लिष्ट चरित्र है। जिस विश्वकान्त पर वह सर्वस्व बलिदान करने को तैयार है, उसी से विवाहन करने के कारण घृणा भी है। दूसरी ओर प्रोफेसर रमाशंकर से उसका मन नहीं लगता फिर भी विवाह उसी से करती है। वह आत्माभिमानी, व्यवहारकुशल,

दृढ़ निश्चयी तथा प्रतिहिंसा वृत्ति से युक्त चित्रित की गई है। उसका चरित्र अत्यन्त सजीव है। विश्वकान्त की गुरू बनकर अन्ततः अपनी सामर्थ्य का प्रमाण दे ही देती है। विश्वकान्त उसी के विचारों से प्रेरित होकर संन्यास ग्रहण करता है। वह अपने प्रेम को विवाह की वेदी पर बलि चढ़ाकर आत्मा को तड़पते हुए छोड़ देती है। कुसुम से कोमल मालती अन्त में अपने ही प्रति कठोर बन गई है।

निष्कर्षत: यह स्पष्ट हो जाता है कि मालती का चरित्र एक सच्ची भारतीय नारी का चरित्र है, जिसको सुरुचियों से लगाव, उसमें पुरुष के गुणों के प्रति आकर्षण, सहज प्रेमभावना, त्याग और अपने प्रेमी के लिए कल्याण-भाव है।

**निष्कर्ष :-**

निष्कर्ष रुप में कह सकते हैं कि 'सिन्दूर की होली' पात्रों में से मुरारीलाल, माहिरअली, भगवन्तसिंह, हरनन्दनसिह तथा डाक्टर वर्गप्रतिनिधि पात्र हैं। मनोजशंकर, मनोरमा तथा चंद्रकला असामान्य पात्र हैं। इन तीनों पात्रों के चरित्र में वैचित्र्य की मात्रा अधिक है। मुरारीलाल और माहिरअली अपने-अपने वर्ग के गुण-दोषों का यथार्थ प्रतिनिधित्व करते हैं। हरनन्दनसिंह जमींदारों की छत्र-छाया में पलनेवाले चापलूस लोगों का प्रतिनिधि है और भगवन्तसिंह जमींदारों का जीवन्त प्रतिनिधि है। डॉक्टर भी अपने वर्ग का सफल प्रतिनिधित्व करता है। हरनन्दनसिंह और माहिरअली दोनों के चरित्रों में वर्गगत विशेषताओं के साथ-साथ व्यक्तिगत विशेषताओं का भी सुन्दर समन्वय है। इन दोनों पात्रों के मन में पापपुण्य की भावनाओं का संघर्ष सफलता से चित्रित किया गया है। दोनों ही पात्र लोभी होने के कारण पापमार्ग की ओर प्रवृत्त होते हैं।

'संन्यासी' के मालती को छोड़कर शेष सभी पात्र स्थिर चरित्र हैं। विश्वकान्त तो 'आग और पानी और रात-दिन' एक ही साथ है। 'संन्यासी' के पात्रों का चरित्र-चित्रण पर्याप्त स्पष्ट तथा प्रभावोत्पादक शैली में किया गया है। नाटक के सभी पात्र सजीव व्यक्ति है, नाटककार

के हाथ की कठपुतली नहीं। मिश्रजी के आलोच्य नाटकों में पात्रों में जो विशेषताएँ दिखायी दी है वह निम्न प्रकार से -

1. लक्ष्मीनारायण मिश्र के पात्रों के चरित्र समाज के यथार्थ का प्रतिनिधित्व करते हैं। पात्रों के चरित्र की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता सेक्स की समस्या है।
2. नाटककार चरित्रों के चरित्रांकन में परम्परावादी भी है और युगबोध का आख्याता भी।
3. प्रेम और विवाह के विषय में नाटकार इब्सन से बहुत कुछ प्रभावित है। अत: उसके अनेक पात्र ऐसे हैं जो प्रेम किसी दूसरे से करते है और विवाह किसी दूसरे से। (केवल चंद्रकला को छोड़कर)
4. इन पात्रों के चरित्रचित्रण एकदम मानवीय हैं। उनका आलेखन स्वाभाविकता के धरातल पर उतारकर किया गया है।
5. पात्रों की धमनियों में भारतीय रक्त को प्रवाहित करने में नाटककार सफल रहा है। जहाँ भी अवसर मिलता है पात्र प्राचीन गौरव, आस्तिकता और निष्ठा का आख्यान करते पाये जाते हैं।
6. स्वदेश-प्रेम मिश्रजी के पात्रों की उल्लेखनीय विशेषता है।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि मिश्र जी के नाटकों में बौध्दिकता और मनोवैज्ञानिकता का आग्रह अपेक्षाकृत अधिक दिखता है। इनके पात्रों की विशेषता है कि रुढ़िवादिता का ध्वंस कर समाज के सामने सत्य को रखने का सामर्थ्य रखते हैं।

## संदर्भ सूची

1. सं.डा.हरदेव बाहरी,शिक्षक हिन्दी शब्दकोश, पृ.123
2. सं. डा. गोविंद चातक, आधुनिक हिन्दी शब्दकोश, पृ.202
3. श्री. नवलजी, नालन्दा विशाल शब्दसागर, पृ.366
4. सं. करुणा पति त्रिपाठी, लघुत्तर हिन्दी शब्दसागर, पृ.322
5. सं.रामचन्द्र वर्मा, संक्षिप्त हिंन्दी शब्दसागर, पृ.304
6. लक्ष्मीनारायण मिश्र, सिन्दूर की होली, पृ.4
7. वही, पृ. 4
8. वही. पृ. 4
9. वही. पृ. 5
10. वही. पृ.23
11. वही. पृ. 28
12. वही. पृ. 41
13. वही. पृ. 41
14. वही. पृ. 46
15. वही. पृ. 46
16. वही. पृ. 67
17. वही. पृ. 66
18. वही. पृ. 4
19. वही. पृ. 55
20. वही. पृ. 50

21. वही. पृ. 42
22. वही. पृ. 40
23. वही. पृ. 86
24. वही. पृ. 104, 105
25. वही. पृ. 120
26. लक्ष्मीनारायण मिश्र, संन्यासी, पृ.57
27. वही. पृ. 43
28. वही. पृ. 46
29. वही. पृ. 110
30. वही. पृ. 55
31. वही. पृ. 102
32. वही. पृ. 102
33. वही. पृ. 54
34. वही. पृ. 122
35. वही. पृ. 24
36. वही. पृ. 166
37. वही. पृ. 169